!! अयोध्यासरयूभ्यां नमः !!

अयोध्या - दर्पण

लेखक एवं प्रकाशक

ब्रह्मचारी श्री भगीरथराम जी

शान्तिकुटी, गोकुल भवन, वशिष्ठ कुण्ड
श्री अयोध्याजी (उ0प्र0)

सम्पादक

गणेशदास 'भक्तमाली'

सुदामाकुटी, वृन्दावन (मथुरा)

चैत्र शुक्ल 9 (रामनवमी) सं0 2049

चतुर्थ संस्करण
2013

जम्बूतीर्थादुपावृत्तो गच्छेत्तुन्दिलकाश्रमम्।।
न दुर्गतिमवाप्नोति स्वर्गलोके च पूज्यते।
तत्राश्रमसमाभ्यासे स्नानं कुर्वन्ति मानवः।

उक्त जम्मू तीर्थ से चलकर तुन्दिलाश्रम का दर्शन करना चाहिए। यहाँ पर विधिपूर्वक श्रीसरयू में स्नान करके तीन रात्रि उपवास पूर्वक निवास करने पर सम्पूर्ण रोग पापों सहित दूर होते हैं और अन्त में वैकुण्ठलोक की प्राप्ति होती है। इसलिए प्राणियोंकों चाहिए कि रमणीय एवं पवित्र तुन्दिलाश्रम में यत्नपूर्वक स्नान, दर्शन, पूजन अवश्य करें।

अगस्त्य-सर

आश्रमाद्दक्षिणे भागे सर आगस्त्य संभवम्।
आगस्त्य् सर आसाद्य पितृदेवार्चने रतः।।
त्रिरात्रोपोषितस्तत्र त्वग्निष्टोमफलं लभेत्।
शाकमूल फलैर्वापि कल्पयन्वृत्तिमाप्नुयात्।।

उक्त तुन्दिलाश्रम से दक्षिण भाग में अगस्त्य-सर पितृ देवार्चन के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ पर विशेषकर उपवास पूर्वक तीन रात्रि निवास करने पर अग्निष्टोम यज्ञ का फल प्राप्त होता है। निराहार रहने में असमर्थजनों के लिए कन्दमूल फल द्वारा लघु आहार पूर्वक काल व्यतीत करने पर वाल्यभाव में तथा युवा एवं वृद्धावस्था में किये गये पाप सम्पूर्ण रूप से नष्ट होते हैं और वह प्राणी अगस्त्य ऋषि का कृपापात्र बनकर भगवत् में अनन्यता प्राप्त करता है। (वर्तमान समय में कण्डैलगंज में अगस्त्य-सर नामक तीर्थ है जहाँ मेला लगा करता है।)

श्रीपराशर मुनि

अथातः श्रूयतां भद्रे सरय्वास्तट उत्तरे।
यानितीर्थानि पुण्यानि तानि ते कथयाम्यहम्।।
सरय्वा उत्तरे तीरे पराशर मुनेः स्थलम्।
सरयू सलिले स्नात्वा पूजयेच्च पराशरम्।।

श्री शंकर जी ने कहा- हे देवि! सरयू के उत्तर तटवर्ती पवित्र तीर्थो का वर्णन सुनो- श्रीसरयू के उत्तर तीर पर परम पवित्र पराशर मुनि का आश्रम है। यहाँ पर सरयू स्नान करके श्रीपराशरजी का उत्तम रीति से पूजन

करना चाहिए जिससे सम्पूर्ण कामनायें सिद्ध होती हैं। (यह आश्रम वर्तमान समय में परास गाँव में है। घृताची कुण्ड इसके निकट सरयू तट पर है।)

गोकुल, श्रीकुण्ड, महालक्ष्मी

गोकुलादीनि तीर्थानि पुण्यान्यायतनानि च।
तेषां वदामि माहात्म्यं तव प्रीत्या वरानने।।
गोकुलायां महातीर्थं श्रीकुंडमिति विश्रुतम्।
श्रीकुंडसन्निधौ देवि महालक्ष्मीः विराजते।।

उक्त तीर्थ से आगे चलकर पुण्यवर्द्धक गोकुल ग्राम, नामक तीर्थ के निकट अनेक तीर्थ हैं। उनमें सर्व प्रसिद्ध श्रीकुण्ड तथा उसी के समीप श्रीलक्ष्मीजी विराज रही हैं। श्रीकुण्ड में स्नान करके विधिपूर्वक पितरों का तर्पण करते हुए श्रद्धापूर्वक श्रीलक्ष्मीजी का पूजन करने पर प्राणी सर्वथा श्रीलक्ष्मीजी का कृपापात्र होता है और उसकी दरिद्रता दूर होती है। साधकों को मन्त्र-साधन में यह लक्ष्मी महापीठ सिद्धि-दान में बड़ा सहायक है। यथाशक्ति यहाँ पर अन्न, वस्त्रादि, दान भी कर्तव्य है। आश्विन शुक्ल अष्टमी को यहाँ की वार्षिकी यात्रा एवं श्रीलक्ष्मीजी का पूजन करने पर निर्धनतादि कष्ट कभी नहीं भोगने पड़ते हैं।

श्रीस्वप्नेश्वरी देवी

ततः स्वप्नेश्वरी देवी देवि पूज्या विधानतः।
भविष्यं कथयेत्स्वप्ने भक्तस्याग्रे शुभाशुभम्।।
अद्यापि प्रत्ययस्तत्र कार्य एवं विजानता।
भूतं भावि भवत्सर्वं वदेत्स्वप्नेश्वरी निशि।।

उक्त तीर्थ से कुछ दूर चलकर आदर पूर्वक पूजन करने योग्य श्रीस्वप्नेश्वरी देवी प्रतिष्ठित हैं। उपवास पूर्वक स्नान करके श्रीस्वप्नेश्वरी देवी का पूजन करे। पश्चात् स्वनेश्वरी देवी का मन्त्र जपते हुए वहाँ शयन करने पर वे प्राणियों के शुभा-शुभ का निर्णय कर तीनों काल की बातें बताती हैं (जिसका प्रत्यक्ष अनुभव आज भी बुद्धिमानजनों को वहाँ जाकर करना चाहिए। इनकी यात्रा प्रतिमास में अष्टमी व चतुर्दशी तिथियों में करनी चाहिए।)

वरस्रोत कुटिला संगम

ततः पूर्व दिशाभागे वरस्रोतो विराजते।
नद्या कुटिलया तस्याः संगमः पापनाशनः।।

उक्त तीर्थ से पूर्व दिशा में वरस्रोत एवं कुटिल नदी का संगम अति पाप-नाशक है। वहाँ पर प्राणियों को श्रद्धापूर्वक कार्तिक पूर्णिमा तिथि में स्नान, दानादि विधिपूर्वक करना चाहिए जिससे सब पापों से छुटकारा पाकर दिव्यलोक की प्राप्ति होती है। (यह संगम चौखड़िया घाट पर प्रसिद्ध है।)

कुटिलार सरयू संगम

ततो गच्छेत देवेशि तीर्थं पापप्रणाशनम्।
कुब्जायाः संगमस्तीर्थं सर्वतीर्थाधिकं स्मृतम्।।

तदुपरान्त परम-पवित्र पाप-नाशक कुटिला सरयू संगम तीर्थ पर जाना चाहिए जो सब तीर्थों में उत्तम तीर्थ है यहाँ पर ही अष्टावक्र ऋषि के शापाभिभूत राज-कन्यायें कुब्जा दोष से मुक्त हुई थीं। उन्हीं कन्याओं के वंश द्वारा कान्यकुब्ज देश विख्यात हुआ। रामनवमी को यहाँ की वार्षिकी यात्रा महत्वप्रद है। (यह संगम मँहगूपुर गाँव में है अब भी कुटिला नदी टेढ़ी नदी के नाम से प्रसिद्ध है।)

मखस्थान, मनोरमा नदी

कुटिलासंगमादेवि ईशान्ये क्षेत्र मुत्तमम्।
मखस्थानं महत्पुण्यं यत्र पुण्या मनोरमा।।

उक्त कुटिला संगम से ईशान दिशा में पुण्यतम मखस्थान एवं मनोरमा नदी सब पापों का नाश करने वाली प्रसिद्ध हैं। जो चैत्र पूर्णिमा को स्नान, दर्शन, पूजन करने पर जनमात्र को भुक्ति-मुक्ति प्रदान करती हैं। यहाँ पर महाराज श्रीदशरथ जी ने अनेक अश्वमेधादि यज्ञों को करके श्रीरामभद्र आदि पुत्र-रत्नों को प्राप्त किया था। वहाँ पर समस्त देव, यक्ष, नाग, किन्नरों समेत इन्द्र तथा सम्पूर्ण तीर्थ उत्सव पूर्वक स्नान करते हैं। जो मनुष्य इस तीर्थ में स्नान करता है उसकी शुभकामनायें अवश्य ही पूर्ण होती हैं। (इसका वार्षिक पर्व चैत्र पूर्णिमा है। पुत्र-प्राप्ति के लिए अब भी सहस्रों नर-नारी उक्त पर्व पर एकत्रित होकर यहाँ स्नान करते हैं, जो कि श्रीदशरथजी की संस्मृति

का स्थल है। यह स्थान मखौड़ा नाम से प्रसिद्ध वर्तमान समय में मड़सी ग्राम में है।)

पुण्यहरि

पुनरहट ग्राम में पुण्यहरि कुण्ड है, इसमें स्नान, दान का अनन्त पुण्य है। विधिपूर्वक नियमित स्नानसे पाण्डु आदि रोगों से छुटकारा मिलता है। सप्तहरियों में से एक श्रीपुण्यहरि का यहीं स्थान है, मन्दिर निर्माण की आवश्यकता है। बमौवा ग्राम में वामदेवेश्वर महादेव, जनमेजय कुण्ड के दक्षिण तट पर यमदग्निकुण्ड, दशरथ सरोवर आदि तीर्थ स्मरणीय हैं। सबके जोर्णोद्धार की आवश्यकता है।

चौरासी-कोशी परिक्रमा

चैत्र पूर्णिमा को पुण्य सलिला मनोरमा नदी में विधिवत् स्नान करते हुए वहीं निवास करें। स्मरण रहे कि यह पूर्णिमा तिथि चक्रवर्ती महाराजा श्रीदशरथजी के द्वारा किये गये पुत्रेष्टि यज्ञ की पूर्णाहुति की तिथि है। प्रतिपदा को प्रातःकाल स्नान करके चौरासी कोसी परिक्रमा के लिए भगवत् नाम स्मरण पूर्वक प्रस्थान करना चाहिए। विश्राम स्थल निम्न प्रकार हैं-

(1) राम रेखा 10 मील। (2) सेवरा घाट 12 मील। यहाँ श्रृंगी ऋषिकी गुफा दर्शनीय है। (3) गोसाईंगंज 6 मील, (4) आगागंज और टिकरी के मध्य, (5) रामपुर भगन गाँव सूर्यकुण्ड, 5 मील। (6) दराबगंज 6 मील। सीताकुण्ड, रामकुण्ड आदि का दर्शन। (7) देवसिया पारा 8 मील। (8) रूरूढेमा होते हुए आस्तीकन गाँव 8 मील। (9) सिरसा गाँव, जनमेजय कुण्ड 8 मील। (10) अमानीगंज 6 मील। (11) रुदौली 8 मील। (12) पटरंगा 12 मील। (13) घाघरा का कमियार घाट पार कर पंचवटी, 14 मील। (14) सरयू तट, जम्बू तीर्थ 5 मील। (15) बाराह क्षेत्र, पचखा गाँव, सरयू घाघरा संगम 12 मील। यहाँ बाराह भगवान् एवं श्रीनरहरिदास जी की चरणपादुका के दर्शन। (16) बाराही देवी (उत्तरी भवानी) 10 मील। (17) राँगी 8 मील। (18) नवाबगंज 10 मील। (19) सिकन्दरपुर के मार्ग से मखौड़ा-मनोरमा 10 मील। (20) अशोक वाटिका, सीता कुण्ड 12 मील (अयोध्या) दूरी का माप अनुमानित है।

चौदह -कोशी परिक्रमा

शंकर उवाच-

श्रण्वपरां प्रवक्ष्यामि साम्वत्सरी प्रदक्षिणाम्।
ऊर्जे शुक्ल नवम्यां यां कुर्वन्ति सर्वसज्जनाः।।
प्रातरुत्थाय श्रीरामं चिन्तयेभ्दक्ति भावतः।
रामघट्टमथो गत्वा कृत्वा स्नानादिकं ततः।।
विलोकयन्व्रजेन्मार्ग सीतारामौ स्मरन् प्रियौ।
चैतरण्यामथाचम्य सूर्यकुंडं ततो व्रजेत्।।
तत्र स्नात्वाथ दत्वा च सूर्यं देवं समर्चयेत्।
रतिकुसुमायुधयोः कुंडं दृष्ट्वा ततः परम्।।
गच्छेच्छी गिरिजाकुंडं स्नात्वा तामपि पूजयेत्।
मन्त्रेश्वरं ततो दृष्ट्वा निर्मलीकुंडमाव्रजेत्।।
तत्र स्नानादिकं कृत्वा गोप्रतारं पुनर्व्रजेत्।
गोप्रतारं परं प्राप्य स्नात्वा दत्वा जपन्परम्।।
गुप्तहरिं च सम्पूज्य विश्रम्याथ ततः परम्।
चक्रहरिं च सम्पूज्य यमस्थलं विलोकयेत्।।
आचम्य ब्रह्मघट्टेऽथ सुमित्राघट्टके तथा।
कौशल्याकैकय्योर्घट्टे स्नात्वा ऋणविमोचने।।
पापमोचनमाचम्य स्नायाल्लक्ष्मण घट्टके।
श्रीलक्ष्मणं प्रणम्याय स्वर्गद्वारे प्लवं चरेत्।।
स्नात्वा श्रीजानकी घट्टे रामघट्टे पुनर्व्रजेत्।
श्रीसरय्वां तनुः स्नात्वा प्रीत्या सम्पूजयेत्प्रभुम्।।
आश्रमं पुनरागच्छेत्सीतारामौ स्मरन् सदा।
प्रदक्षिणा प्रिये चेयं चतुर्वर्गफलप्रदा।।

श्री शंकर जी ने पार्वती से कहा-हे देवि! अब मैं वार्षिकी चौदह-कोशी परिक्रमा का वर्णन करता हूँ जिसे सज्जनवृन्द कार्तिक शुक्ल अक्षय-नवमी को करते हैं। हे देवि! प्रातः उठकर श्रीहरि का स्मरण करते हुए श्रीरामघाट पर आकर स्नानादि कर श्रीरामजी का पूजन करें। पश्चात्।

श्रीअवध को साष्टांग प्रणाम करें। उपरान्त श्रीरामजी का ध्यान करता हुआ वहाँ से यात्रा प्रारम्भ करके वैतरणी में आचमन करें। श्रीसूर्य कुण्ड में विधिपूर्वक स्नान, दान करते हुए श्रीसूर्यनारायण का पूजन करें, और यहाँ पूर्व कहे गये सूर्य-स्तव का पाठ भी करें। वहाँ से आगे चलकर कुसुमाहे गाँव में रति कुण्ड व कुसुमायुध कुण्ड का दर्शन करें। अनन्तर जनकौरा जनौरा गाँव में श्रीगिरिजा कुण्ड में स्नान कर गिरिजा देवी का पूजन करते हुए वहाँ श्रीमन्त्रेश्वर महादेव का दर्शन, पूजन करें। फिर कुछ दूर पर गुप्तार घाट में स्नान, तर्पण एवं यथाशक्ति दान एवं इष्ट मन्त्र का जप करते हुए श्रीगुप्तहरि तथा श्रीचक्रहरि का दर्शन पूजन करके पूर्व कथित श्लोकों के द्वारा स्तुतिकर प्रणाम करें। आगे चलकर यम-स्थल (यमथला) का दर्शन करके चक्रतीर्थ, ब्रह्मकुण्ड एवं सुमित्रा घाट में आचमन करें। श्रीकौशल्या घाट, कैकेयी घाट, राजघाट एवं ऋणमोचन घाट पर स्नान करें। पश्चात् पापमोचन (गोला घाट) में आचमन करें। फिर श्रीलक्ष्मण घाट स्नान कर श्रीलक्ष्मणजी का दर्शन एवं उन्हें प्रणाम करें। स्वर्गद्वार, नया घाट, वासुदेव घाट, श्रीजानकी घाट, श्रीरामघाट पर स्नान करके पुनः श्रीसीतारामजी का भक्तिपूर्वक पूजन करके श्रीअयोध्या को साष्टांग प्रणाम करें और नगर प्रदक्षिणा की पूर्ति करें। वहाँ से श्रीभगवच्चरण चिन्हों का चिन्तन करते हुए अपने-अपने आश्रम को आवें। इसी अक्षय-नवमी तिथि को भूमि पर श्रीअवध की स्थापना हुई थी। एवं इसी तिथि को सतयुगारम्भ भी हुआ था इनकी वर्षगांठ का यह दिवस होने से शास्त्रों में यह प्रदक्षिणा अत्यन्त महत्व वाली वर्णित है। यह यात्रा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चतुर्वर्ग फल देने वाली है।

पंचकोशी-परिक्रमा

श्रृणुप्रिये प्रवक्ष्यामि प्रदक्षिणा क्रमं परम्।
प्रातरुत्थाय मतिमान् रामतीर्थाप्लवं चरेत्।।
ततः सन्ध्यामुपासित्वा श्रीरामं पूजयेज्जनः।
शुभां पुरीं प्रणम्याय सीतारामौ स्मरन्सदा।।
विलोकयन्व्रजेन्मार्गं हर्षनिर्मलमानसः।
प्राप्य तिलोदकीं नत्वा विद्याकुंडं तथैव च।।

विद्यादेवीं नमस्कृत्य गच्छेद्रत्नाचलं शुभम्।
तत्र श्रीराघवं नत्वा व्रजेत्कुंडं विनायकम्।।
दृष्ट्वाथ चुटकीं देवी व्रजेद्विष्णुहरिं विभुम्।
चक्रतीर्थे ततः स्नात्वा जपन्मन्त्रं तु तारकम्।।
आचम्य ब्रह्मघट्टेऽथ सुमित्रा घट्टके तथा।
कौशल्याकैकय्योर्घट्टे स्नात्वाथ ऋणमोचने।।
पापमोचनमालोक्य स्नायाल्लक्ष्मणघट्टके।
श्रीलक्ष्मणं प्रणम्याय स्वर्गद्वारे प्लवं चरेत्।।
स्नात्वा श्रीजानकीघट्टे रामघट्टं पुनर्व्रजेत्।
श्रीवाशिष्ठ्यां पुनः स्नात्वा प्रीत्यासम्पूजयेत्प्रभुम्।।
आश्रमं पुनरागच्छेत्सीतारामौ स्मरन्सदा।
प्रदक्षिणांक्रमेणैव कुर्वन्ति कवयः सदा।।
प्रदक्षिणा फलं नैव वक्तुं शक्नोति कश्चन।
कुर्वन्प्रदक्षिणामेवं ह्यभीष्टफलमाप्नुयात्।।

श्रीशंकरजी ने कहा-हे देवि! प्रातः श्रीरामघाट पर स्नान एवं श्रीरामजी का पूजन करके, अवधको साष्टांग प्रणाम करना चाहिए। पश्चात् श्रीसीतारामजी का ध्यान करते हुए वहाँ से यात्रा प्रारम्भ कर, तिलोदकी सरयू संगम स्थल को प्रणाम करें। फिर वहाँ से चलकर श्रीविद्यादेवी का दर्शन व प्रणाम करके मणिपर्वत पर सीता-अम्बा सहित मणिस्वरूप श्रीरघुवंशभूषण को प्रणाम करें। फिर गणेशकुण्ड में आचमन कर श्रीचुटकी देवी का दर्शन करके सामने चुटकी बजावें। वहाँ से आगे चलकर श्रीविष्णुहरि का दर्शनकर श्रीचक्रवतीर्थ में स्नान कर कुछ देर मन्त्रराज का जप अवश्य करें। उपरान्त ब्रह्मकुण्ड व सुमित्राघाट में आचमन करें। फिर कौशल्या घाट पर स्नान करें। फिर पापमोचन तीर्थ को दर्शन प्रणाम करके श्रीलक्ष्मण घाट पर स्नान करने के उपरान्त श्रीलक्ष्मणजी को प्रणाम करें फिर स्वर्गद्वार और जानकी घाट पर स्नान करके श्रीरामघाट पर पुनः आकर स्नान करते हुए श्रीरामजी का पूजन एवं श्रीअवध को साष्टांग प्रणाम करके यात्रा को समाप्त करें। फिर श्रीसीतारामजी का स्मरण करते हुए

अपने-अपने आश्रम को आवें। इस प्रकार प्रदक्षिणा करने पर इच्छित फल की प्राप्ति अवश्य होती है।

एकादशी-यात्रा

प्रातरुत्थाय मतिमान्स्वर्गद्वाराप्लवं चरेत्।।
ततोधर्महरिं दृष्ट्वा जन्मस्थानं विलोकयेत्।।
चक्रतीर्थे ब्रह्मकुंडे तथा ऋणविमोचने।
स्नात्वा सहस्रधाराख्ये मुच्यते जन्मसंकटात्।।

श्रीशंकरजी ने कहा- हे देवि! प्रथम स्वर्गद्वार पर प्रातः श्रीसरयू स्नान, तर्पण एवं पूजन करके श्रीअवध को प्रणाम करते हुए वहाँ पर ऊपर भाग में श्रीधर्महरि विष्णु भगवान् का दर्शन, पूजन स्तवन करें। श्रीरामजन्मभूमि का दर्शन एवं बालरूप भावना से राघवेन्द्र को साष्टांग प्रणाम अर्पण करके बाद में चक्रतीर्थ, ब्रह्मकुण्ड, राजघाट, ऋणमोचन एवं सहस्रधारा तीर्थ में स्नान करें। श्रीसरयूजी स्थान भेद से महत्ववर्द्धन करती हैं। प्रति एकादशी को इस प्रकार की यात्रा करने पर प्राणी जन्म-मरण रूप संकट से छूटकर अपने इष्ट को ही प्राप्त करता है।

नित्य - यात्रा

शंकर उवाच-

नित्य दर्शन यात्रां वै श्रृणु वक्ष्यामि शोभने।
प्रथमं मारुतेः स्थानं व्रजेन्निर्मलमानसः।।
तत्र श्रीमारुतिं नत्वा जन्मभूमिं ततो व्रजेत्।
बालरूपञ्च श्रीरामं नत्वा तत्र जनप्रियम्।।
रत्नसिंहासनं प्राप्य राजराजेशमानमेत्।
स्तुवन् रामं पुनर्नत्वा सभ्रातरं ततो व्रजेत्।।
श्रीरामं सीतया सार्द्धं दृष्ट्वा कनकमन्दिरे।
परानन्दं फलं लब्ध्वा मुच्यते जन्मसंकटात्।।

श्रीशंकरजी ने कहा - हे देवि! सरयूजी में प्रातः स्नान कर नागेश्वर या क्षीरेश्वरनाथ का दर्शन-पूजन करके हनुमान गढ़ी में श्रीहनुमानजी का दर्शन-पूजन करके उनको प्रणाम कर श्रीरामजन्मभूमि का दर्शन करें। पश्चात् सुमित्रा भवन, सीता कूप, जन्मस्थान, श्रीरत्नसिंहासन,

श्रीकनक-भवन में जाकर श्रीजनक-नन्दिनीजी समेत श्रीराघवेन्द्रजी का दर्शन स्तवन करते हुए आत्म-निवेदन करके जन्म-मृत्यु रूप संकट से सर्वथा मुक्त होकर परमानन्द प्राप्त करें।

उक्त यात्राओं में शास्त्र प्रणाम स्वीकार करने पर ठीक-ठीक लेखानुसार आचरण करना उचित है।

रामकोट-यात्रा

वशिष्ठ कुण्ड से आरम्भकर स्वर्गद्वार, जानकीघाट, रामघाट होते हुए, दन्तधावन कुण्ड दाहिने कर क्षीरेश्वरनाथ होते हुए वशिष्ठ आश्रम पर पूर्ण होगी।

अयोध्या का परिचय

जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि। उत्तरदिसि सरयू बह पावनि।।
जे मज्जहिं ते विनहिं प्रयास। मम समीप नर पावहिं बासा।।
सब बिधि पुरी मनोहर जानी। सकल सिद्धिप्रद मंगल खानी।।
अति प्रिय मोहिं यहाँके बासी। मम धामदा पुरी सुख रासी।।
देखत पुरी अखिल अघ भागा। बन उपवन वाटिका तड़ागा।।
तीर-तीर देवन्ह के मन्दिर। चहुँदिसि तिन्हके उपवन सुन्दर।।
कहुँ-कहुँ सरिता तीर उदासी। बसहिं ज्ञानरत मुनि सन्यासी।।
पुर शोभा कछु बरनि न जाई। बाहर नगर परम रुचिराई।।
दरस परस मज्जन अरु पाना। हरै पाप कह वेद पुराना।।
नदी पुनीत अमितमहिमा अति। कहि न सकै सारदा विमलमति।।
रामधामदा पुरी सुहावनि। लोक समस्त विदित अति पावनि।।
चारि खानि जग जीव अपारा। अवध तजे तनु नहिं संसारा।।
अवध प्रभाव जान तब प्रानी। जब उर बसहिं रामधनु पानी।।
नारदादि सनकादि मुनीसा। दरशन लागि कोशलाधीशा।।
दिनप्रति सकल अयोध्याआवहिं। देखि नगर विराग विसरावहिं।

(श्रीरामचरित मानस)

श्रीरामनवमी व्रत माहात्म्य

अयोध्यायास्तदा मूर्ति ददृशुश्चाग्रतस्तुते।
शुक्लाम्बरधरा देवी सखीभिः परिवारिता।।

दिव्यमालाञ्च सा देवी विभ्रती सुमनोहरा।
शंख-चक्रधरा देवी दिव्य चन्दन भूषिता।।
रामप्रिया पुरी चाद्या विबुधैस्सेविता च सा।
वशिष्ठवामदेवाद्यै र्मुनि वृन्दैश्च शोभिता।।
ईदृशीविमला दृष्टा चौरैश्च नागनन्दिनि।
पापैर्न योध्यते यस्मा त्तेनायोध्येति कथ्यते।।

भगवान् श्री शंकरजी ने पार्वजी से श्रीअयोध्या-माहात्म्य सम्बन्धी एक इतिहास वर्णन करते हुए कहा-हे देवि! एक समय की बात है कि मारवाड़ में रहने वाले बड़े प्रसिद्ध पाँच पापी थे। उनमें एक तेली, दूसरा कोरी, तीसरा नट, चौथा धीवर और पाँचवाँ कुम्हार। विभिन्न पाँच ग्रामों में पाँचों रहते थे और पाँचों का जीवन पृथक्-पृथक् पाप कर्म से पूर्ण था। तेली को गौ-पीड़ा पहुँचाने के पाप से, कोरी को अनुज बधू को कुदृष्टि से देखने के अपराध से, नट को पथिक लूटने के अपराध में, धीवर और कुम्हार को चोरी के अपराध में राजदूतों ने बन्दी बनाकर पवित्रात्मा न्यायप्रिय राजा के समक्ष उपस्थित किया।

दयालु राजा ने इनके अपराधों को जान-सुनकर भी दयावश प्राण दण्ड नहीं दिया। केवल उन सबके सिरों को मुण्डित कराकर और सब धन छीनकर अपने राज्य से बाहर निकाल देने की आज्ञा दी। राज्य से बाहर जाकर फिर किसी जंगल में पाँचों इकटठे हो गये और वहीं गुप्त रूप से रहने लगे। उस प्रान्त के सभी गाँवों में चोरी करके उन्होंने बहुत-सा धन एकत्रित किया और उससे वेश्या-गमन, मद्यपान तथा माँसाहार आदि करते हुए कालयापन करने लगे। कुछ दिनों के बाद उस देश के राजा द्वारा भी पकड़कर बाहर निकाले गये। ये पाँचों पापी परम दुःखित होकर एक देश से दूसरे देश में घूमते-फिरते कहीं भी स्थिर होकर विश्राम न पा सके। क्या करें कहाँ जाँय वह चिन्ता उन्हें सदा लगी रहती थी। इतने में सुयोगवश कुछ यात्रीगण श्रीराम-जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) से प्रस्थान कर अयोध्या को चल पड़े। मार्ग में किसी जंगल भाग में इन पाँचों चोरों ने लूटने की इच्छा से उनका पीछा किया। किन्तु मार्ग में लूटने का अवसर न

पाकर साथ-साथ चलकर उन्हें लूटना चाहा।

चोरों ने इस यात्रीदल को आश्वासन दिया कि हम भी आप लोगों के सहयोगी हैं और श्रीअयोध्याजी का दर्शन करने जा रहे हैं। अतः आप लोगों के साथ-साथ चलेंगे। साथ चलते हुए मार्ग में इन लोगों को चोरी करने का अवसर न मिला, इतने में वे यात्रीगण श्रीअयोध्याजी पहुँच गये। श्रीअयोध्याजी के पूर्वद्वार पर उपस्थित होते ही इन पापियों के प्रति अयोध्याजी के संरक्षक दिव्य-दूतगण अपने हाथों में दण्ड लेकर इन पापियों को दण्ड देने के लिए दौड़ पड़े। दैवात् दयार्द्रचित्त असित मुनि की दृष्टि इन सब पर पड़ गई। दूतों के भय से पाँचों चोर आर्त्तस्वर से चिल्ला उठे।

भगवान्! रक्षा करो, इस वाक्य को सुनकर असित मुनि ने उनको सर्वथा छोड़ देने के लिये दूतों से अनुरोध किया और कहा-यदि आप सब इन पापियों पर कृपा करेंगे तो महत् पुण्य के भागी होंगे। मुनि की आज्ञा मानकर दूतों ने पाँचों पापियों को छोड़ दिया और अयोध्या प्रवेश में विघ्न नहीं किया तब चोरों ने असित मुनि से कहा- हे भगवन्! ये सब कौन हैं जो हमको श्रीअयोध्याजी के भीतर प्रवेश नहीं करने देते थे और हमें ताड़ना देते थे, यह बताकर आप हमारे संसय को दूर कीजिये, हम आपको बार-बार प्रणाम करते हैं। श्रीअसित मुनि ने उत्तर दिया कि आप सब परम भाग्यवान् हैं जो इस श्रीराम जन्मोत्सव के अवसर पर श्रीअयोध्याजी में उपस्थित हुए हैं। ये सब श्रीअयोध्याजी के दूत हैं, जो पापी पुरुषों को अयोध्या जी में प्रवेश नहीं करने देते हैं। मेरे द्वारा निषेध करने पर आप सबको छोड़कर वे लोग चले गये। अब आप सब का कर्तव्य है कि विधिपूर्वक श्रीअयोध्याजी की यात्रा करें। जिसके प्रभाव से सम्पूर्ण पाप नष्ट हो जायेंगे और यहाँ से थोड़ी दूर आगे चलने पर आप सबको आश्चर्यमयी अद्‌भुत दिव्य-विभूति का दर्शन होगा। इतना कहकर असितमुनि अन्तर्धान ही गये और उन पाँचों पापियों के अयोध्याजी में प्रवेश करते ही सहसा श्रीअयोध्या देवी का देदीप्यमान-स्वरूप प्रत्यक्ष दिखाई पड़ा। श्वेताम्बर धारण किये अनेक सखियों से संसेवित, सुन्दर मनोहर हार कण्ठ में धारण किये हुए, दिव्य-मालाओं से सजी हुई शंख चक्र हाथों में लिये दिव्य-चन्दन से चर्चिता श्रीरामजी की परमप्रिया,

वशिष्ठ वामदेवादिक मुनिवृन्दों से सदा-सेविता श्रीअयोध्या देवी साक्षात् प्रकट हुईं। हे पार्वती श्रीअयोध्या पुरी का दिव्य-दर्शन असित मुनि के प्रभाव से इन पापियों को मिला। दिव्य अयोध्याजी का सानन्द दर्शन करते हुए ये सब परमानन्द को प्राप्त हुए।

श्रीअयोध्याजी की विशेषता यही है कि जहाँ पापों का चारा न चल सके उसी दिव्य-भूमि को श्रीअयोध्याजी कहते हैं। उन पापियों के पाप रूपवान होकर उनके शरीरों को छोड़कर श्रीअयोध्या देवी के भय से अलग खड़े हो गये। श्रीअयोध्या देवी हाथ में गदा लेकर पापों को मारने के लिए दौड़ पड़ीं। पाँचों चोर देख रहे थे, पहले चोरों को ऐसा लगा मानों हमें ही मारेंगी, किन्तु देवी ने उनके शरीरों से निकले हुए नीले वस्त्रधारी, कराल-विकराल शरीर, लोहे के आभूषण धारण किये हुए, रक्तवर्ण के केशों वाले एवं छिन्न-भिन्न हाथ, पैर घृणित भयंकर रूप पापों को देखकर उन पर गदा से प्रहार करना प्रारम्भ किया वे पाप भी हाथों में दण्ड लिये सामना करने को उद्यत हुए पर परम पराक्रमशालिनी श्रीअयोध्या देवी ने उन सबको क्षण भर में मार भगाया और श्रीअयोध्याजी ने अपना नाम चरितार्थ कर दिखाया। वे सब पाप विग्रह श्री अयोध्या जी से बाहर जाकर एक पीपल के पेड़ के नीचे जा छिपे और वहाँ जाकर रोने लगे जिसे सुनकर सब लोग विस्मित हुए। इधर वे पाँचों चोर स्वर्ग द्वार आ पहुँचे। उसी दिन चैत्र की रामनवमी तिथि थी, इसलिए वे स्वर्गद्वार घाट पर श्रीसरयू में स्नानकर जन्मस्थान को गये, निराहार-व्रत पूर्वक श्रीराम-जन्मभूमि का उन लोगों ने दर्शन किया जिससे वे सब अपने सभी पापों से मुक्त हो शुद्ध भावना को प्राप्त हुए। उसी समय यमराज ने चित्रगुप्त को बुलाकर धीरे से कान में कहा-इन सब चोरों के अपराधों को क्षमा किया जाता है मैं आज्ञा देता हूँ कि तुम लोगों ने इन चोरों के पापों का जो लेख किया है उसे नष्ट कर दो, श्रीअयोध्याजी देवी के प्रभाव से इनकी सब लेखमाला नष्ट की जाती है। परात्पर विष्णु भगवान् की आदि पुरी यह अयोध्या है इसका ऐसा ही माहात्म्य है और जो मुमुक्षुजन हैं वे इस अयोध्या की ही शरण लेते हैं। इतना सुनते ही चित्रगुप्त उदासचित्त हो गये और सोचने लगे कि हमारा सब परिश्रम ही व्यर्थ हो गया। यदि ऐसा ही है

तो हम इस कार्य से अवकाश ही लेना उचित समझते हैं क्योंकि श्रीराम-जन्मभूमि के ऐसे माहात्म्य से बड़े-बड़े पापी भी श्रीराम-जन्मोत्सव पर यहाँ आकर सीधे साकेत चले जायेंगे, विशेषकर कलिकाल में पातकीजन श्रीअयोध्याजी में जाकर पाप रहित हो जावेंगे तब हमारा यह लेखा-जोखा व्यर्थ सिद्ध होगा।

अतः हम इस कार्य से सर्वथा अवकाश प्राप्त करने की प्रार्थना करते हैं। इस प्रकार कहते हुए कुछ आँसू गिराते हुए पाँचों पापियों की पापलिपि को चित्रगुप्त ने बड़े कष्ट से परिमार्जित किया। इधर यमराज के गुप्तचर ने जो सारे विश्व में घूमा करते हैं, उनकी दृष्टि उन पाप विग्रहों पर पड़ी जो कि श्रीअयोध्या देवी की ताड़ना से दुःखित हो पीपल के पेड़ के नीचे रोदन कर रहे थे। उन्होंने करुणापूर्ण-चित्त, उन पाप विग्रहों से पूछा कि आप लोग कौन हैं और किसलिए रो रहे हैं आप सब अपना पूर्ण परिचय दीजिए? अपना परिचय देते हुए पाप विग्रहों ने बताया कि-हमारी उत्पत्ति मरुकांतार देश में हुई और पापियों के द्वारा हमारा पालन हुआ। ये पातकी माता-पिता गुरुजन एवं वेद की मर्यादाओं को तिलांजलि देकर हम सबका पूर्ण लालन-पालन करते रहे, कुछ दिन उपरान्त 'उपर्युक्त कथा में वर्णित प्रसंग से' अयोध्या में रामनवमी के अनुपम अवसर से लाभ उठाकर उन्होंने हम लोगों से श्रीअयोध्या देवी की कृपा से मुक्ति पाली और हम लोग देवी द्वारा मारकर श्रीअवध के बाहर निकाल दिये गये, इसलिए उन मित्रों के वियोग में परम - दुःखित हो हम सब इस पेड़ का आश्रय लेकर रो रहे हैं। अब हमारा संरक्षक या सहायक कोई भी दृष्टि में नहीं है, हम किंकर्त्तव्य-विमूढ़ हो रहे हैं। अतः भगवान्! यदि आप लोग हमारे लिए कोई विधान बना सकें तो बड़ी कृपा हो। इस प्रकार पाप-विग्रहों के दीन वचनों को सुनकर यमदूतों का हृदय पिघल गया और उन्हें उनके मित्रों से पुनः मिलाने का पूर्ण आश्वासन देकर यमराज के पास पहुँचे और सारा वृत्तान्त कह सुनाया तथा श्रीअयोध्या देवी पर घोर अत्याचार का आरोप लगाया।

श्रीशंकर भगवान् ने पार्वती से कहा- हे देवि! भगवान् विष्णु की जन्मभूमि के माहात्म्य को वे सब यमदूत भलीभाँति नहीं जानते थे और जानें

भी कैसे, जिस दिव्यपुरी के महत्व को ब्रह्मा आदिक देवता भी पूर्णतया वर्णन करने में असमर्थ हैं और जिसके माहात्म्य से अनन्त पाप-राशि से घिरे हुए प्राणी श्रीरामनवमी के दिन रामजन्मभूमि का दर्शन करने मात्र से सम्पूर्ण पापों से छुटकारा पा जाते हैं और तत्काल उस दिव्य साकेतलोक के प्राप्त करने के अधिकारी होते हैं, जहाँ पर जरा, मरण, मोह आदि क्लेशों का लेश भी नहीं है। जिस प्राणी पर श्रीरामजन्मभूमि व अयोध्या की कृपा हो जाती है उसके ऊपर यमराज का वश (शासन) भला कैसे चल सकता है। अस्तु -

यमदूतों की बात सुनकर यमराज ने सौहार्द प्रकट करते हुए उनके प्रति कहा कि तुम सबकी बुद्धि विमलादेवी के प्रति दूषित हो गई है अतः इस अपराध को क्षमा कराने के लिए हम तुम सबके साथ वहाँ ही चलना उचित समझते हैं, अतः शीघ्र ही सवारी तैयार करो हम सभी अयोध्यापुरी के दर्शन के लिए प्रस्तुत हैं। इतने में यमराज के सभी पार्षद पुरी सज-धज के साथ महाराज यमराज का जयकारा लगाते हुए वहाँ आकर उपस्थित हो गये और यमराज अपने भैंसेकी सवारी पर बैठकर उन सब गणों के साथ अयोध्यापुरी, श्रीविमला देवी के समक्ष पहुँच गये, आते समय मार्ग में शिल्पी-सम्राट् श्री विश्वकर्माजी से भेंट हुई तो यमराज ने उनसे पूछा कि इस समय आप श्रीराम जन्मोत्सव छोड़कर अयोध्या से कहाँ जा रहे हैं, तब विश्वकर्मा ने यम से कहा कि- मैं श्रीअवधुपरी का दर्शन एवं सरयू स्नान करता हुआ श्रीरामजन्मभूमि से ही आ रहा हूँ। आने का यह कारण है कि ब्रह्मा आदिक समस्त देवता वहाँ पर उपस्थित हैं और श्रीरामजन्मभूमि का दर्शन करने वाले असंख्य प्राणियों की जन्मभूमि पर इस समय भीड़ हो रही है, वहाँ के दिव्य प्रभाव से वे सब बैकुण्ठलोक को जायेंगे अतः उन सबके लिये हमें आदेश प्राप्त हुआ है कि अतिशीघ्र जाकर इन सबके लिए समुचित सुन्दर निवास-स्थान निर्माण करो, इसलिये उन सब यात्रियों के गृह-निर्माण हेतु जाने की मुझे शीघ्रता है आप आज्ञा दीजिये बिलम्ब हो रहा है। ऐसा कहकर विश्वकर्माजी चल पड़े यह सम्वाद सुनते ही उन सब यमदूतों के छक्के छूट गये। साकेतपुरी को पहुँचते ही यमराज को प्रथम तमसा नदी का दर्शन मिला। मार्ग में जो भी क्षण बीते वे अवध के माहात्म्य वर्णन करने में लगे।

पुरी का दर्शन होते ही यमराज ने पार्षदों सहित सवारी से उतरकर भूमि पर लोटकर श्रीअयोध्या को साष्टांग प्रणाम किया और वहाँ से पैदल चलकर दुतगति से गुप्तारघाट, श्रीसरयू तट पर पहुँच गये जो पुरी का मुख्यतम क्षेत्र (मस्तक स्थान) है वहाँ पर बद्धाञ्जलि होकर हर्षपूर्ण गद्-गद् वाणी से श्रीविमला देवी (अयोध्यापुरी) की स्तुति करने लगे जो इस प्रकार है -

श्रीअयोध्या-अष्टक

श्रीयम उवाच-

अयोध्यायै नमस्तेऽस्तु रामपुर्यै नमो नमः।
आद्यायै च नमस्तुभ्यं सत्यायै तु नमो नमः।।
सरय्वावेष्टितायै च नमो मातस्तु ते सदा।
ब्रह्मादिवन्दिते मातर्ऋषिभिः पर्य्युपासिते।।
रामभक्तप्रिये देवि सर्वदा ते नमो नमः।
ये ध्यायन्ति महात्मानो मनसा त्वां हि पूजिते।।
तेषां नश्यन्तिपापानि ह्याजन्मोपार्जितानि च।
अकारो वासुदेवः स्यात् यकारस्तु, प्रजापतिः।।
उकारो रुद्ररूपस्तु तां ध्यायन्ति मुनीश्वराः।
सूर्यवंशोभ्दवानां तु राज्ञां परमधर्मिणाम्।।
तेषां सामान्यधात्री त्वं तथा सुकृतिनामपि।
महिमानं न जानन्ति तव देव मुनीश्वराः।।
कथं त्वं ज्ञायसे देवि मन्दैर्बुद्धि विवर्जितैः।
नमस्तेऽस्तु सदा देवि सदा देवि नमो नमः।।
नमोऽयोध्ये नमोऽयोध्ये पापं नस्त्वमपा कुरु।

श्रीअयोध्या देवी को मेरा बारम्बार प्रणाम है। श्रीराम पुरी के लिए मेरा नमस्कार है। आद्यापुरी सत्यादेवी के लिये मेरा नमस्कार है। श्रीसरयू द्वारा वेष्टित अवधपुरी को मेरा नित्य प्रणाम है ब्रह्मादिक देवताओं से वन्दनीय चरणारविन्द वाली प्रमुख ऋषियों द्वारा सदा उपासित हैं जो ऐसी रामभक्तों के लिए अत्यन्त प्रिय अयोध्या देवी को हार्दिक प्रणाम है। जो महात्मागण मानसिक पूजन करते हुए आपका नित्य ध्यान करते हैं उनके

सम्पूर्ण पापों को आप तत्काल नष्ट कर देती हैं। आपके नाम में जो अकार वर्ण है उससे वासुदेव, यकार से प्रजापति श्रीब्रह्माजी, उकार से साक्षात् श्रीशंकरजी का बोध होता है। 'ध्या' से ध्यान परायण ऋषिगण जिसका पूर्ण सुखास्वादन करते हैं परम-धार्मिक सूर्यवंश में होने वाले समस्त राजाओं को आप ही धारण करने वाली हैं और अन्यान्य पुरुषों को भी आश्रय प्रदान करती आई हैं। आपकी महिमा को मुनिगण और देव समुदाय भी पूरी तरह नहीं जानते तो हम सब मन्द-बुद्धि-जन भला आपकी महिमा को कैसे जान सकते हैं। इसलिए हे भगवती आपके श्रीचरणों में मेरा बार-बार प्रणाम अर्पण है। हे अयोध्ये! आपके लिए पुनः-पुनः नमस्कार है। कृपाकर आप हमारे सबके पापों को क्षमा प्रदान करें। इस प्रकार प्रार्थना करके यमराज ने पुनः साष्टांग प्रणाम किया।

इस स्तुति को सुनकर श्रीअयोध्या देवी स्वयं प्रकट होकर यमराज से बोलीं कि- हे महाबुद्धिशालिन्! मैं तुम्हारे ऊपर अत्यन्त प्रसन्न हूँ तुम्हारी जो भी इच्छा हो बरदान माँग लो। जिस लिये तुम आये हो निःसंकोच होकर स्पष्ट कहो, मैं अवश्य दूंगी, इसमें संशय नहीं। तब यमराज ने प्रार्थना पूर्वक कहा- हे देवि! आप यदि हम पर प्रसन्न हैं तो कृपाकर अपनी पुरी के मध्य में रहने के लिये हमें निष्कण्टक स्थान प्रदान करें। दूसरे उन चोरों के साथ आये हुए पाप-विग्रहों, को जिन्हें आपने मार भगाया और पीपल के पेड़ के नीचे रो रहे हैं, उन सबकी मुक्ति का विधान कृपा-पूर्वक कर दीजिये। तीसरे मेरे दूतों ने जो आपके प्रति दुर्बुद्धिवश अपराध किया है, उसके लिए सर्वथा क्षमा प्रदान करिये।

इतना सुनकर श्रीअयोध्या देवी ने यमराज से कहा- तुम्हारे लिए निष्कण्टक यमस्थल नाम का स्थान मैं देती हूँ, कार्तिक मास में यम-द्वितीया को यहाँ आकर जो लोग सरयू में स्नान करेंगे और इस यम-स्थल (जमथरा) का दर्शन करेंगे उनके लिए तुमसे किसी प्रकार का भय न रहेगा। दूसरे पाप-विग्रहों की मुक्ति तो हमारे और तुम्हारे वाक्यों के द्वारा हो जायेगी। तीसरे पार्षदों के पाप क्षमा के लिये तुम्हारा कहा हुआ 'अयोध्या-अष्टक' नित्य पाठ करना ही पर्याप्त है और इस अष्टक को जो भी कोई प्रातःकाल

उठकर नित्य पढ़ेंगे, उन्हें श्रीअवधवास का पूर्ण फल मिलेगा और उन पर हमारी सदा प्रसन्नता रहेगी एवं उनके सारे मनोरथों को पूर्ण करूँगी। इस प्रकार वरदान देकर अयोध्या देवी अन्तर्धान हो गईं और यमराज ने उनके कथन के अनुसार सरयू तट पर 'जमथला' नामक स्थान अपने विश्राम के लिए बनाया। चित्रगुप्तादि सब यमदूत अपने चरित्रों को स्मरण करते हुए लज्जित हुए एवं अयोध्या देवी की आराधना में लग गये।

तदुपरान्त श्रीशंकरजी ने पार्वती से कहा- हे देवि! इस प्रसंग को जो भी प्राणी सुनेंगे वे सुन्दर भोगों को भोगते हुए अन्तमें दिव्य-साकेत-धाम को प्राप्त होंगे। इस माहात्म्य का वर्णन सर्वप्रथम अगस्त्य ऋषि ने सुतीक्षण मुनि से किया था और उन्हीं सुतीक्ष्ण से सुनकर हमने तुमको सुनाया है। यह अत्यन्त गुप्त रहस्य शठों को, नास्तिकों को, गुरुनिन्दकों को तथा वेद-शास्त्र की मर्यादा को न मानने वालों के लिए कभी नहीं सुनाना चाहिए। श्रद्धालु, विष्णुभक्तजनों को तो अवश्य ही सुनाना, बुद्धिमानजनों का नितान्त कर्तव्य है क्योंकि इसके पढ़ने, सुनने से भी सर्वथा पापों का नाश होता है। हे देवि! कहाँ तक कहें। श्रीअयोध्याका मानसिक स्मरण एवं ध्यान और उक्त श्रीअयोध्याअष्टक का पाठ प्रतिदिन निद्रा से उठते ही जो जन करते हैं, वे जगत् में कहीं भी रहें, श्रीअयोध्या देवी के कृपाभाजन होकर परम-साकेत- धाम अवश्य प्राप्त करते हैं।

श्रीराम-स्तोत्र-रत्न

नारद उवाच-

वन्दे सुराणां सारं च, सुरेशं श्यामसुन्दरम्।
योगीश्वरं योगवीजं, योगिनां च परं गुरुम्।।
ज्ञानानन्दं ज्ञान रूपं, ज्ञानगम्यं सनातनम्।
तपसां फलदातारं सर्वं सम्पत्तिदं शुभम्।।
तपोवीजं तपोरूपं, तपो द्रव्यं तपोवरम्।
वरेण्यं वरदं चेडच्यं, भक्तानुग्रहकारकम्।।
वेदा न शक्ता यंस्तोतुं, किमहं स्तौमि तं प्रभुम्।
कारणं भुक्ति मुक्तीनां, नरकार्णव तारणम्।।

आशुतोषं प्रसन्नास्यं, करुणामय सागरम्।
ब्रह्मज्योतिः स्वरूपञ्च, दुष्टदानव नाशनम्।।
अपरिच्छिन्न शक्तिं च, कायवाङ्मनसः परम्।
सत्वाद्गुणात्परं रामं, रजस्तमसः परम्।।
ब्राह्मणानामुपास्यं च, योगिनां ह्रदयंगमम्।
कोटिकन्दर्प लावण्यं, द्विभुजं रघुनन्दनम्।।
ज्योतिरूपमरूपं च, रमानाथं जगद्धितम्।
ब्रह्मज्योतिः प्रभुं रामं, वासुदेवं जनार्दनम्।।
वैकुण्ठं माधवं विष्णुं, दैत्यारिं मधुसूदनम्।
नमो हंसाय शुद्धाय, शुचीनां शुचये नमः।।
विष्वक्सेनाय महते, रामायामित तेजसे।
मत्स्यकूर्मबराहाणां, रूपिणे परमात्मने।।
रामचन्द्राय महते, रामायामित तेजसे।
रामचन्द्राय हरये, नमस्ते सिंह रूपिणे।।
नमो वामनरूपाय, जामदग्न्याय ब्रह्मणे।
नमस्ते रामचन्द्राय, श्रीकृष्णाय नमो नमः।।

रामदुर्ग रक्षक

श्रीशंकरजी पार्वतीजी से बोले- कि हे देवि! राजद्वार में वायु पुत्र हनुमान पूर्व में प्रतिष्ठित हैं। उनसे कुछ दक्षिण अंगद सहित सुग्रीव विराजित हैं। दुर्ग से दक्षिण शिल्प-विद्या के ज्ञाता नल-नील प्रतिष्ठित हैं और कुबेर टीला नवरत्न के पूर्व बानर श्रेष्ठ सुषेणजी शोभित हैं। नवरत्न के उत्तर भाग में गवाक्ष नाम के बानर स्थित हैं और दुर्ग के पश्चिम द्वार पर दधिवक्त्रजी रहते हैं। दुर्ग के पश्चिम द्वार पर दुर्गेश्वर नाम से मैं रहता हूँ। उनके सामने शतवलि, गंधमादन, ऋषभ, शरभ एवं पनस विराजते हैं। उत्तर द्वार पर विभीषणजी स्थित हैं और विभीषण की स्त्री सरमा नाम की देंवी विभीषण के पूर्व में सदा रहती हैं, जो कि धर्मशीलों की रक्षा और दुष्टों का दमन नित्य ही प्रसन्नचित से कौशलपुरी में करती हैं। उनके पूर्व भाग में विघ्नेश्वर श्रीगणेशजी विराजते हैं। जिनके दर्शन से मनुष्यों को

विघ्न-कष्टप्रद नहीं होते। उनके पूर्व दिशा में पिण्डारक वीर स्थित हैं जो कि इस पुरी की रक्षा दुष्टों को ताड़ना देते हुए करते हैं।

मातगैड़

उनके पूर्व दिशा में श्रीमत्तगजेन्द्र विभीषण के पुत्र (मातगैड़) का स्थान है उनके सामने सप्तसागर सरोवर में स्नान कर अथवा सरयू स्नान कर भक्तगणों को उनकी पूजा करना परम कर्तव्य है। नवरात्रि की पञ्चमी तिथि यहाँ की वार्षिकी यात्रा कही गई है, जो कि गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्यादिक द्वारा विधिपूर्वक करने पर भक्तों की सब कामनायें पूर्ण करती हैं। प्रतिमास मंगल के दिन यहाँ का दर्शन, पूजन प्रशस्त है। वहाँ से पूर्व दिशा में द्विविदजी बिराजते हैं। उनके ईशानकोण में मयन्द हैं, उनके दक्षिण में जाम्बवान उनसे दक्षिण दिशा में महाराज केशरीजी विराजते हैं, ये सब वानर दुर्ग के संरक्षक हैं।

श्रीसप्तसागर तीर्थ

सप्त सागर नाम्ना तु सरः सर्वार्थदं प्रिये।
यत्र स्नात्वानरोधीमान् सर्वान् कामानवाप्नुयात्।।
आश्विने पूर्णिमायां तु यात्रा साम्वत्सरी भवेत्।
पूर्णसिद्धि मवाप्नोति यामवाप्य न शोचति।।

मत्तगजेन्द्रजी के उत्तर भाग में अति निकट सम्पूर्ण अर्थ सिद्धिप्रद परम-पवित्र सप्तसागर नामक तीर्थ है जहाँ पर विधि पूर्वक स्नान करने से धर्म-प्रिय प्राणियों की सारी कामनायें पूर्ण होती हैं। जिससे वह किसी प्रकार अभाव व शोकग्रस्त नहीं रहता। इस दिव्य-तीर्थ की वार्षिकी स्नान यात्रा आश्विन पूर्णिमा कही गई है। यहाँ पितरों का तर्पण व श्राद्ध एवं ब्राह्मण भोजनादि अनन्त फलप्रद तथा अक्षय तृप्तिकारक शास्त्रों ने बताया है।

(वर्तमान समय में यह महत्वपूर्ण तीर्थ अत्यन्त दुरवस्था में है अतः इसका समुचित उद्धार कराना ही धर्म-प्रिय प्राणियों का कर्तव्य है।)

छोटी देवकाली

ये नगर की अधिष्ठात्री देवी हैं। सप्तसागर के पूर्वी भाग में प्रतिष्ठित हैं। नवरात्रि में दर्शन-पूजन प्रशस्त है। सप्तसागर के उत्तरी भाग में लोटनी भवानी प्रसिद्ध हैं।

अयोध्या सीमा ज्ञापन

सहस्रधारामारभ्य योजनं पूर्वतो दिशि।
पश्चिमे च तथा देवि योजनं संमतोऽवधि।।
दक्षिणोत्तरभागे तु सरयूस्तमसावधि।
एतत्क्षेत्रस्य संस्थानं हरेरन्तर्गृहं स्मृतम्।।
मत्स्या कृतिरियं भद्रेपुरी विष्णुरुदीरिता।
पश्चिमे मत्स्यमूर्धा तु गोप्रताराश्रितं प्रिये।।
पूर्वतः पुच्छभागो हि दक्षिणोत्तर मध्यमः।
एतत्क्षेत्रस्य संस्थानं मया सुन्दरिवर्णितम्।।
न योध्या सर्वतो यस्मात्तामयोध्यां ततो विदुः।
विष्णोराद्या पुरी चेयं क्षितिं नस्पृशति प्रिये।।
विष्णोस्स्सुदर्शने चक्रेस्थिता पुण्यांकुरा सदा।
यत्र साक्षात् स्वयं देवो विष्णुर्वसति सर्वदा।।
यस्यां जाता महीपाला सूर्यवंशसमुद्भवाः।
इक्ष्वाकु प्रमुखाः सर्वे प्रजापालन तत्पराः।।
सरयू नाम तटिनी मानसात् प्रभवोत्तमा।
पश्चिमोत्तरतः पुण्या पूर्वस्यां दिशि सर्वदा।।

श्रीरुद्रयामल में अयोध्याजी की सीमा का निर्णय इस प्रकार है।

सहस्रधारा तीर्थ (लक्ष्मणघाट) से एक योजन (चारकोस) तक पूर्व दिशा में तथा एक योजन पर्यन्त ही पश्चिम दिशा में दक्षिण दिशा में तमसा नदी पर्यन्त, उत्तर दिशा में सरयू की सीमा पर्यन्त इसका विस्तार है। यह पुरी मत्स्याकार विष्णु द्वारा बताई गई है। मत्स्य का मस्तक भाग पश्चिम की ओर गोप्रतार तीर्थ (गोप्तारघाट) और पुच्छ भाग पूर्व रामघाट की ओर विल्वहरि घाट तक है। दक्षिण उत्तर मध्यभाग, श्रीशंकर जी द्वारा पार्वती के प्रति वर्णित है। किसी से अर्थात् पापों से संघर्ष में न आने वाली होने के कारण विद्वानों द्वारा श्रीअयोध्या नाम से यह पुरी आदरित हुई। भगवान् विष्णु की आदि पुरी होने के कारण सुदर्शन चक्र पर विराजती हुई पृथ्वी को स्पर्श कभी नहीं करती है। पुण्यांकुरों को उदभव करने वाली इस पुरी में

सदा साक्षात् विष्णु निवास करते हैं। सूर्य्यवंशी इक्ष्वाकु प्रमुख राजाओं की यह राजधानी बनी। मानसरोवर से उत्पन्न हुई श्रीसरयू नदी जिसके पश्चिम, उत्तर व पूर्व में सर्वदा प्रवाहित हैं। जिसका कि घाघरा एवं सरयू संगम क्षेत्र पुण्यों को बढ़ाने वाला प्रसिद्ध है, मुनिगणों से सेवित तट होने से जगत् में उन्नति को दर्शाती है। सम्पूर्ण तीर्थ समुदाय में श्रीगंगाजी एवं श्रीसरयू अम्बाजी, ब्रह्मा का साक्षात् द्रव-स्वरूप मानी गई हैं इसलिए ये दोनों नदियाँ सर्ववंद्या एवं देवताओं द्वारा भी नमस्कृत हैं। इन दोनों के ही स्थान आदि से ब्रह्महत्यादिक पाप समूल नष्ट होते हैं। पुण्यतमा-भूमि अयोध्या को धन्य इसलिए कहा गया है।

वेदों में अयोध्या

(वेदों में राम-कथा नामक पुस्तक से साभार संग्रहीत)

अथर्वण वेद (संहिता भाग) दशम काण्ड प्रथम अनुवाक द्वितीय सूक्त के 28वें मन्त्र के उत्तरार्द्ध से इस प्रकरण का आरम्भ होता है-

पुरं यो ब्रह्मणो वेद यस्याः पुरुष उच्यते।
यो वै तां ब्रह्मणो वेदामृतेनावृतां पुरम्।।
तस्मै ब्रह्म च ब्रह्माच चक्षुः प्राणं प्रजां ददुः।

(अथर्वण वेद 10/2/28/29)

इन दोनों मन्त्रों का एक ही में अन्वय है अतः साथ ही अर्थ दिया जाता है जो कोई ब्रह्म को अर्थात् परात्पर परमेश्वर, परमात्मा जगदादिकारण, अचिन्त्य वैभव श्रीसीतानाथ श्रीराम पुरी को जानता है उसे वह भगवान् तथा भगवान् के पार्षद सबही लोग चक्षु प्राण और प्रजा देते हैं। किस पुरी को जानने के लिए कहते हो? जिस पुरी का पुरुष बोला जाता है-कहा जाता है अर्थात् जिसका प्रतिदिन नाम स्मरण किया जाता है उस पुरुष की पुरी को जानने के लिए श्रुति कह रही है। जो कोई अनन्त शक्ति सम्पन्न सर्व-व्यापक, सर्व-नियन्ता, सर्वशेषी और सर्वाधार श्रीरामजी की अमृत अर्थात् मोक्षानन्द से परिपूर्ण उस अयोध्यापुरी को जानता है उसके लिए साक्षात् भगवान् के हनुमान, सुग्रीव, अंगद, मयन्द, सुषेण, द्विविद, दरीमुख, कुमुद, नील, नल, गवाक्ष, पनस, गंधमादन, विभीषण, जाम्बवान और दधिमुख इत्यादि प्रधान षोडश पार्षद अथवा नित्य और मुक्त सब जीव

मिलकर उत्तम दर्शन-शक्ति उत्तम प्राणनशक्ति अर्थात् आयुष्य और बल तथा सन्तान आदि देते हैं। 'ददुः' इस भूतकालिक प्रयोग को देखकर घबड़ाना नहीं चाहिए। वेद की सब बातें अलौकिक ही होती हैं।

न वै तं चक्षुर्जहाति न प्राणो जरसः पुरा।
पुरं यो ब्रह्मणो वेदयस्याः पुरुष उच्यते।।

(अथर्वण 10/2/30)

जिस पुरी का परम पुरुष कहा जा रहा है अर्थात् जिसका निरूपण सर्वत्र वेदशास्त्रों में किया जाता है और यहाँ भी 28वें मन्त्र के पूर्व के मन्त्रों से जिस पुरुष का निरूपण किया गया है उसे भगवान् श्रीराम की उस पुरी अयोध्या को जो कोई जानता है उस प्राणी को दर्शन-शक्ति अर्थात् बाह्य और आभ्यन्तरिक नेत्र तथा शरीरिक और आत्मिक-बल मृत्यु से पूर्व निश्चय ही नहीं छोड़ते हैं। तात्पर्य यह है कि भगवान् श्रीराम की इस लोकस्थ उस पुरी का दर्शन करने वाला सब प्रकार से सुखी और पवित्र जीवन इस लोक में व्यतीत करता है। अर्थात् जिला फैजाबाद में श्रीरामकी जो पुरी है वह उतनी ही पवित्र है जितनी कि परमधाम की पुरी पवित्र है तथा यहाँ का भी वैसा ही माहात्म्य है जितना कि उस दिव्य-लोकस्थ पुरी का है। अन्तर इतना है कि यहाँ की अयोध्या माधुर्य-धाम है और वहाँ की भोग ऐश्वर्य लीला-धाम है।

अष्टचक्रा नव द्वारा देवानां पुरयोध्या।
तस्यां हिरण्यमय कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृतः।।

(अथर्वण 10/2/31)

इस मन्त्र? को जानने से प्रथम श्रीअयोध्याजी का स्वरूप जान लेना चाहिए। भगवान् श्रीरामजी की अयोध्यापुरी के चारों ओर कनक प्राकार हैं। यह अष्टम चक्र है।

इसको अष्टमावरण कहते हैं इस चक्रके पश्चात् सप्तमचक्र अर्थात् सप्तमावरण है। इसीमें अनेक रत्नों से जटित घाटवाली श्रीसरयूजी नित्य बिहार करती हैं। इसके बाद षष्ठचक्र अर्थात् षष्ठावरण है। इसी आवरण में भगवान् का परमप्रिय 'प्रमोदवन' है। प्रमोदवन की चारों दिशाओं में चार पर्वत हैं। पूर्व दिशा श्रृंगार पर्वत, दक्षिण दिशा में मणिपर्वत, पश्चिम दिशा में

लीला पर्वत और उत्तर दिशा में मुक्ता पर्वत है। इसी प्रमोद वन में, श्रृंगार वन, बिहार वन, तमाल वन, रसाल वन, चम्पक वन, चन्दन वन, पारिजात वन, अशोक वन, बिचित्रवन, कदम्ब वन, कामवन और नागेश्वर वन ये द्वादश वन हैं। इसी वन में प्रतिक्षण सर्व ऋतु सब रागिंणियां निवास करती हैं।

इसके पश्चात् पंचमचक्र अर्थात् पंचमावरण है। इसी आवरण में मिथिलापुरी, चित्रकूट, बृन्दावन, महावैकुण्ठ व मूल बैकुण्ठ इत्यादि विराजमान हैं। इसके पश्चात् चतुर्थचक्र अर्थात् चतुर्थावरण है। इसी में महाविष्णुलोक, रमा वैकुण्ठ, अष्टभुज भौमपुरुषलोक, महा-ब्रह्मलोक और शम्भुलोक हैं। इसी के भीतर भगवान् भिन्न-भिन्न अवतार लेकर भिन्न-भिन्न लीलायें करते हैं अतः सर्वलीलालोक इसी आवरण में विराजमान हैं। इसके पश्चात् तृतीय चक्र अर्थात् तृतीयावरण है। इसी आवरण में भगवान् का मानसिक ध्यान करने वाले योगी और ज्ञानीजन निवास करते हैं। इसके पश्चात् द्वितीयावरण है। इसमें वेद, उपवेद, शास्त्र, पुराण, उपपुराण, ज्योतिष, रहस्य तन्त्र, नाटक, काव्यकोश, ज्ञान, कर्मयोग वैराग्य, यम, नियम इनके साधन, काल, कर्म गुण इत्यादि सब देहधारी होकर निवास करते हैं। इसके पश्चात् प्रथमावरण है। इस आवरण में महाशिव महाब्रह्मा, महेन्द्र, महावरुण, कुबेर, धर्मराज, दिग्पाल, महासूर्य, महाचन्द्र, यक्ष, गन्धर्व, गुह्यक, किन्नर, विद्याधर, सिद्ध, चारण और अणिमा, लघिमा, महिमा प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशिता, वशिता, अवस्थिति अर्थात् यथेष्ठ सुखावाप्ति ये आठ सिद्धियाँ अथवा अनूर्मित्व, दूर श्रवण, दूर दर्शन, मनोजव, कामरूप, परकाय प्रवेश, स्वच्छन्द मृत्यु, देवसह क्रीड़ा, संकल्प सिद्धि और आज्ञाऽप्रतिघात ये दश सिद्धियाँ अथवा त्रिकालज्ञता, अद्वन्दता, परचित्ताभिज्ञता, अग्न्यर्काम्बुविष, प्रतिष्टम्भ और पराजय करना ये 5 सिद्धियाँ तथा पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील और खर्व (या वर्ष) ये नव-निधियाँ वास करती हैं।

ग्रन्थों में अयोध्या के सप्त आवरणों का ही उल्लेख है। उसमें और इसमें कुछ विरोध नहीं है। काञ्चन प्राकार जो अयोध्या के चारों ओर अव्यवहित रूप से विद्यमान है उसे ले लेने से आठ आवरण होते हैं उसके

छोड़ देने से सात ही रहते हैं। छोड़ने में हेतु यह है कि उस आवरण में अयोध्याजी के अतिरिक्त और कोई लोक नहीं है और अन्य आवरणों में अन्य लोक आदि बसे हुए हैं उस काँचन प्राकार को ग्रहण करने में हेतु यह है कि वह भी स्वरूपतः एक आवरण है। इसलिए कुछ विरोध नहीं है। कहीं-कहीं भूमि, जल, अनल, वायु, नभ, त्रिप्रकारक अहंकार और महत्तत्व इनको भी सप्तमावरण मान लिया है यह श्रीअयोध्याजी का वर्णन संक्षेप में किया गया है। इतने से प्रस्तुत मन्त्र का अर्थ सुगमता से अवगत हो जावेगा। वह पुरी अयोध्याजी हैं। वह कैसी पुरी है? आठ चक्रों अर्थात् आवरणों वाली है अर्थात् इसमें आठ आवरण हैं जिसमें प्रधान नवद्वार हैं तथा जो दिव्यगुण विशिष्ट, भक्ति प्रपत्ति सम्पन्न, यम नियमादिमान, परम भागवत् चेतनों से सेव्या इति शेषः - सेवनीय है। उस अयोध्यापुरी में बहुत ऊँचा अथवा बहुत सुन्दर प्रकाशपुञ्ज से आच्छादित सुवर्णमय मण्डप है। ऐसा ही वर्णन भार्गवपुराण में भी आया है।

त्रिपाद्विभूति वैंकुंठे विरजायाः परे तटे।
या देवानां पूरयोध्या ह्यमृतेनावृतापुरी।।

श्रीतुलसीकृत रामायण की टीका में श्रीरामचरणदासजी ने सामवेद की एक तैत्तिरीय श्रृति लिखी है। वह भी इसी अथर्वण वेद के मन्त्र के समान ही है यथा-

देवानां पूरयोध्या तस्यां हिरण्यमयः कोशः।
स्वर्गोलोकोज्योतिषावृतो यो वै तां ब्राह्मणो वेदामृतेनावृतां
पुरीं तस्मै ब्रह्म च ब्रह्मा च आयुः कीर्तिं प्रजां ददुः।।

अथर्वण वेद के मन्त्र की व्याख्या समझ जाने के पश्चात् इस श्रुति का अर्थ अत्यन्त सरल हो जाता है अतः इसका अर्थ नहीं लिखा है।

तस्मिन् हिरण्यमये कोशेत्रयरे त्रिप्रतिष्ठिते।
तस्मिन् यद् यक्षमात्मन्वत्तद्वै ब्रह्मविदो विदुः।।

उस विशाल सुवर्णमय मण्डप में उसके अर्थात् उस मण्डप के आत्मा के समान जो पूजनीय देव विराजमान हैं, उसीको 'ब्रह्म स्वरूप' ज्ञानवानजन जानते हैं। अथवा ब्रह्मविदुः में दो पद हैं 'ब्रह्म' और 'विदुः' तब

अर्थ यह हुआ कि विद्वान्जन उसी पक्ष को उसी परमोपास्य देव को परात्पर सनातन महापुरुष जानते हैं। जिस कोश में वह यक्ष विराजमान हैं वह कैसा है? उसमें तीन अरे लगे हुए हैं अर्थात् तीन अरों पर मण्डप बना हुआ है तथा तीनों लोक में वह प्रतिष्ठित है। इस मन्त्र में जो तस्मिन् पद आया हुआ है। वह षष्ठी के अर्थ में है। इसलिए मैंने उसका अर्थ उसके किया। इस मन्त्र में स्पष्ट ही कहा गया है कि अयोध्या के मध्य में जो सुवर्णमय मणिमण्डप है उसमें जो देव विराजमान हैं, उन्हीं को विद्वान् लोग ब्रह्म कहते हैं। अयोध्या के मण्डप में भगवान् श्रीरामजी के अतिरिक्त अन्य कोई भी विराजमान नहीं है, अतः भगवान् श्रीरामजी ही परब्रह्म हैं। उसी अर्थ को विशद करने के लिए मैं एक और श्रुति को यहाँ उद्घृत करता हूँ। इसे भी स्वामी श्रीरामचरणदासजी ने अपनी रामायण टीका में उद्धृत किया है वह यह है-

याऽयोध्या पुरी सा सर्व वैकुण्ठानामेव मूलाधारा मूलप्रकृतेः परातत्सद् ब्रह्ममयी, विरजोत्तरा दिव्य रत्न कोशाढय्या, तस्यां नित्यमेव सीतारामयोर्विहार स्थलमस्ति।।

इसका भावार्थ यह है- कि जो अयोध्यापुरी है वह सर्व वैकुण्ठों का मूल आधार है। वेदों में अनन्त वैकुण्ठों का वर्णन है। उनमें से पाँच को प्रधान माना है। वे पाँच ये हैं।

वैकुण्ठं पंच विख्यातं क्षीराब्धिं च रमाव्ययम्।
कारणं महावैकुण्ठं पंचमं विरजापरम्।।

अर्थात् क्षीरसागर वैकुण्ठ, रमावैकुण्ठ, कारणवैकुण्ठ, महावैकुण्ठ, विरजापर अर्थात् आदि वैकुण्ठ। इन पाँचों वैकुण्ठों का वही मूलाधार है। यदि आदि वैकुण्ठ भी साकेतलोक का ही नाम हो तो वह आदि अर्थात् श्रीअयोध्याजी, शेष चार प्रधान वैकुण्ठों तथा अन्य अनन्त वैकुण्ठों की आधार-भूता हैं। वह मूल प्रकृति से परे अखण्ड और अपरिवर्तनीय ब्रह्ममय हैं, विरजा के दूसरे पार में स्थित हैं दिव्य-रत्न-जटित-मण्डप वाली हैं। उसी अयोध्या में श्रीसीतारामजी की नित्य-विहार भूमि है।

प्रभ्राजमानां हरिणीं यशसा सम्परीवृताम्।
पुरं हिरण्यमयीं ब्रह्मा विवेशापराजिताम्।।

सर्व अन्तर्यामीं भगवान् श्रीरामजी उसी श्रीअयोध्यापुरी में प्रविष्ट हैं अर्थात् विराजमान हैं। वह पुरी कैसी है? अत्यन्त प्रकाशमयी है। पुनः वह कैसी है? मन को हरण करने वाली है। पुनः वह कैसी है? अनन्त कीर्त्ति से युक्त है। पुनः वह पुरी कैसी है? सर्व-पुरियों में श्रेष्ठ है अर्थात् इसकी तुलना कोई पुरी नहीं कर सकती है।

अथर्वण वेद का प्रथम अनुवाक यहाँ पूर्ण हो जाता है। इस अनुवाक के अन्त में इन साढ़े पाँच मन्त्रों मे अत्यन्त स्पष्ट रूप से श्रीअयोध्याजी का वर्णन किया गया है। इन मन्त्रों के शब्दों में व्याख्याताओं को अपनी ओर से कुछ मिलाने की आवश्यकता नहीं है। श्रीअयोध्याजी के अतिरिक्त, अन्य किसी और पुरी का इतना स्पष्ट और सुन्दर वर्णन मन्त्र संहिताओं में नहीं है।

श्रीअयोध्या के वर्तमान आकर्षण

पर्यटकों एवं तीर्थ यात्रियों की जानकारी के लिए हमें कतिपय महत्वपूर्ण स्थानों का उल्लेख करना आवश्यक है।

तुलसी स्मारक भवन, भगवाताचार्य स्मारक सदन, तुलसी उद्यान, सरयू सेतु, वाल्मीकि रामायण भवन, भागवत भवन, रामायण भवन, गीता भवन, श्रीविजयराघव मन्दिर, नेपाली मन्दिर, कनक भवन (जानकी बाग) बिडला धर्मशाला तथा श्रीराम मन्दिर, दिगम्बर जैन मन्दिर, शिख गुरुद्वारा तथा ब्रह्माजी का मन्दिर, ब्रह्मकुण्ड, मणिपर्वत, श्रीराम ग्रन्थागार, पयोहारीजी का स्थान, रानोपाली उदासी स्थान, मानस भवन, श्रीरामजन्मभूमि, रंगमहल, अमावा राज्य मंदिर, श्री वैकुण्ठ मंडप तथा भव्य-शीशमहल, माधुरीकुञ्ज, श्रीहनुमान गढ़ी, बड़ास्थान, नागेश्वरनाथ महादेव, कालेरामजी, लक्ष्मण किला, श्रीझनकी बाबा का मन्दिर, श्रीमणिरामदासजी की छावनी, जानकीघाट, श्रीरामबल्लभा कुञ्ज, श्रीरघुनाथदासजी की छावनी, श्रीतपसीजी की छावनी, खाकी अखाड़ा, खाक चौक, श्रीजानकी महल, हनुमान बाग, भक्तमाल भवन, बड़ा भक्तमाल स्थान (राम दरबार) अशर्फी भवन, गोकुल भवन, वशिष्ठकुण्ड, कुवेर टीला, कौशलेश सदन, दिव्यदेश मन्दिर, छपिया के श्रीनारायण स्वामी का मन्दिर, रामहर्षकुञ्ज प्रभृति।

फैजाबाद - मलेट्री राममन्दिर, गुप्तारघाट तथा कार्त्तिकेय बट और राजकीय उद्यान, दुग्धोत्पादन केन्द्र, औद्योगिक प्रशिक्षण केन्द्र, गुलाबवाड़ी,

कृषि विश्वविद्यालय, अवध विश्वविद्यालय, भरतकुण्ड, सूर्यकुण्ड प्रभृति।

यात्रियों के ठहरने योग्य स्थान

रेलवे विश्राम गृह, अयोध्या स्टेशन के निकट। पर्यटक विश्राम गृह। कानपुर धर्मशाला रायगञ्ज। छन्नूलाल तिवराइन धर्मशाला। डिप्टी महादेव प्रसाद धर्मशाला रायगञ्ज। महादेवी बिडला धर्मशाला, बस स्टेशन के पास। मानस भवन, रामजन्मभूमि के निकट। कनक भवन धर्मशाला। जानकी महल ट्रस्ट धर्मशाला नया घाट। चित्रगुप्त धर्मशाला। हरीसिंह धर्मशाला मारवाड़ी धर्मशाला वासुदेव घाट। लखनऊ धर्मशाला स्वर्गद्वार। बम्बई धर्मशाला। सूरजमहल धर्मशाला। काश्मीरी धर्मशाला। विन्ध्यवासिनी धर्मशाला। जैन धर्मशाला कटरा। फैजाबाद में दामोदरदास की धर्मशाला।

श्रीतुलसी स्मारक-भवन

श्रीअयोध्या-धाम में जहाँ श्रीरामचरितमानस का प्राकट्य हुआ, वहाँ गोस्वामी श्रीतुलसीदासजी का भव्य-स्मारक निर्माण कराना श्रीतुलसी सेवा समिति द्वारा प्रस्तावित हुआ। जिसकी स्वीकृति सन् 1960 में 1 जनवरी को राज्यादेश द्वारा हुई। उस समय प्रदेश के राज्यपाल महामहिम श्री बी0बी0 गिरि महोदय थे। सर्वप्रथम विक्टोरिया पार्क का नाम परिवर्तित कर 'तुलसी उद्यान' नाम राज्य द्वारा प्रख्यात किया गया और उस उद्यान में गोस्वामी तुलसीदासजी की भव्य-प्रतिमा स्थापित हुई। श्री बी0एन0 झा उपकुलपति गोरखपुर विश्वविद्यालय के पुनीत कर-कमलों से श्रावण शुक्ला सप्तमी सन् 1960 ई0 में इसका उद्घाटन हुआ। उद्यान के सामने राजकीय मार्ग का नामकरण गोस्वामी श्रीतुलसीदास मार्ग सरकार द्वारा रखा गया। जिसकी सीमा सरयू तट से हनुमान गढ़ी चैराहा तक है। सरयू सेतु से संलग्न पक्के घाट का नाम 'तुलसी घाट' कर दिया गया।

दन्तधावन कुण्ड के निकटतम तुलसीचौरा के सामने मैदान में 'तुलसी स्मारक भवन' का निर्माण किया गया। महामहिम श्रीविश्वनाथदास जी राज्यपाल उत्तर प्रदेश के कर-कमलों द्वारा उक्त भवन का शिलान्यास 14 मार्च, सन् 1966 ई0 को हुआ। 9 अगस्त 1970 ई0 को डा0 श्री बी0 गोपालारेड्डी राज्यपाल उत्तर प्रदेश द्वारा भवन का उद्घाटन समारोह सुसम्पन्न हुआ।

इस स्मारक भवन में तुलसी पुस्तकालय, वाचनालय, विशिष्ट अतिथियों के लिए विश्राम कक्ष, दो विशाल रंगमञ्च एवं शोध-संस्थान आदि महत्वपूर्ण कार्यों की सम्पूर्ति हो रही है। प्रबन्ध कमेटी इसका संचालन करती है।

जिन महानुभावों की सक्रियता से निर्माण आदि सभी कार्य सुसम्पन्न हुए। उनके नाम इस प्रकार हैं। परमहंस श्रीराममंगल दास जी गोकुल भवन। पं0 श्रीरामपदारथदासजी वेदान्ती रामबल्लभा कुञ्ज। महन्त श्रीरामसूरतशरण गोलाघाट। स्वा0 श्रीसीतारामशरणजी लक्ष्मण किला। पं0 श्रीरामकुमारदास जी रामायणी मणिपर्वत। श्रीप्रेमदासजी मानस-मार्त्तण्ड। महन्त श्रीनृत्यगोपालदासजी। मणिरामदासजी की छावनी। पं0 श्री श्रीकान्तशरणजी। अञ्जनीनन्दनशरणजी। महन्त श्रीरघुवर प्रसादाचार्यजी बड़ा स्थान। श्रीगणेशप्रसाद शुक्ल वकील। श्रीजगदीशशरण मिश्र अधिशाषी अभियन्ता सार्वजनिक निर्माण विभाग। डा0 श्री जे0डी0 शुक्ल आई0सी0एस0। श्रीं जे0पी0सिंह आई0ए0एस0। श्रीरामकृष्ण त्रिवेदी आई0ए0एस। श्रीरामकिंकर सिंह आई0ए0एस0। श्रीपृथ्वीनाथ चतुर्वेदी आई0ए0एस0। श्रीगिरिजाप्रसाद पाण्डेय आई0ए0एस0। श्रीशचीन्द्र कुमार सरकार आई0ए0एस0 आदि महानुभावों ने प्रशासनिक सहायता प्रदान की, जो चिरस्मरणीय है।

सन्तसेवी-स्थान

आज भी अयोध्या में ऐसे अनेक स्थान हैं। जहाँ सादर सन्त-सेवा होती है, जिनके नाम इस प्रकार हैं- श्रीमणिरामदास जी की छावनी, बाबा श्रीरघुनाथदासजी की छावनी, श्रीतपसी जी की छावनी, श्रीहनुमानगढ़ी निर्माणी अखाड़ा, दिगम्बर अखाड़ा, निर्मोही अखाड़ा, खाकी अखाड़ा, श्रीरामबल्लभा कुञ्ज, जानकीघाट स्थान, रघुनाथ कुञ्ज, बड़ीकुटिया, मौनीजी का स्थान मांझा, हनुमानबाग, सनातन मन्दिर, रामकुञ्ज, नरसिंह मन्दिर, चतुर्भुजी मन्दिर, विद्या कुण्ड, पयोहारीजी का स्थान मणिपर्वत, रानोपाली, श्रीरगड़ेदास प्रह्लादघाट, गोकुल भवन, जन्मस्थान, फकीरेरामजी का स्थान, रंगमहल, बड़ा स्थान, विअहुती भवन, बधाई भवन, समथर वाला मन्दिर, लालकोठी झुनझुनिया बाबा, जानकीवर भवन, हनुमान

टेकरी ऋणमोचन घाट, हनुमत् निवास, हनुमत् सदन, सद्गुरू सदन गोला घाट, लक्ष्मण किला, करतलिया बाबा तुलसी घाट, दिव्यकला कुञ्ज, बगही का मन्दिर, श्रीविजयराघव मन्दिर, अशर्फी भवन, तोताद्रिमठ, सन्त निवास, माधुरीकुञ्ज, कोशलेस सदन आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। जहाँ पहुँचने पर अतिथि अभ्यागत समयोचित सुविधा पाते हैं।

प्रख्यात विद्वान्

पं० श्रीरुद्रप्रसादजी अवस्थी। पं० श्रीरुपनारायणजी मिश्र पं० श्रीगोपीनाथ झा। पं० श्रीहनुमानदत्तजी मिश्र। पं० श्री बैजनाथप्रसादजी द्विवेदी। श्रीब्रह्मानन्दजी पाठक। पं० श्रीराम लखनजी पाठक। श्रीपाणिनि पाण्डेय वैदिक। श्रीमहादेवजी भट्ट। श्रीसीतारामजी कर्मकाण्डी। श्रीचन्द्रभालजी ज्योर्तिविद।

श्रीवाल्मीकि रामायण-भवन

अयोध्या के सुप्रसिद्ध सन्त-सेवी स्थानों में सम्प्रति बाबा मणिरामदसजी जी छावनी का प्रथम स्थान है। यहाँ सर्वाधिक सन्त-निवास करते हैं सन्त-सेवा इस स्थान की परम्परागत देन है। इस स्थान के वर्तमान महन्त पं० श्रीनृत्यगोपालदासजी शास्त्री हैं। आपके सेवाकाल में स्थान में कई महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ हुई हैं, जिनमें वाल्मीकि-रामायण-भवन मुख्य है। अयोध्या भगवान् श्रीराम का सर्वाधिक प्रियधाम है। श्रीराम का सर्वाधिक प्रियधाम है। श्रीराम का यशोगान लोक-संस्कृति में सर्वप्रथम आदिकवि महर्षि श्रीवाल्मीकि के द्वारा हुआ। उसके प्रश्चात् हिन्दी में सर्वाधिक रोचक रामचरितमानस का प्रणयन गोस्वामी श्रीतुलसीदासजी के द्वारा हुआ।

अतएव इन दोनों महर्षियों-भक्तमहाकवियों का श्रीअयोध्या से नित्य सम्बन्ध है। यहाँ महर्षि वाल्मीकि का स्मारक भवन होना उतना ही आवश्यक था जितना कि गोस्वामी तुलसीदासजी का। एक (तुलसी स्मारक भवन) की पूर्ति राज्य सरकार द्वारा की गई तथा दूसरे की पूर्ति उक्त छावनी के श्रीमहन्तजी के द्वारा हुई। लाखों रुपयों की लागत से निर्मित होने वाला वाल्मीकि रामायण भवन महर्षि वाल्मीकि का भव्य-स्मारक भवन है।

इसके अधीन शोध-संस्थान, सार्वभौम संस्कृत विद्यापीठ, पुस्तकालय, वाचनालय, कथा-प्रवचन आदि अनेक सार्वजनिक एवं

लोक-हितकारी कार्य हो रहे हैं। इस भवन में वाल्मीकि रामायण के चौबीस हजार श्लोक लीला-चित्रों के साथ संगमरमर पत्थर पर अंकित किये गये हैं। यहाँ महर्षि की एक विशाल-प्रतिमा भी स्थापित की गयी है।

दैनिक सत्संग-स्थल

श्रीमनीरामदासजी की छावनी। श्रीसद्गुरू सदन। फकीरे रामजीका मन्दिर। रामजन्मभूमि। हनुमानगढ़ी। कनकभवन। रामकुञ्ज (रामघाट)। विद्याकुण्ड चतुर्भुजी स्थान। माधुरी कुञ्ज। मधुकरियाजी (चारुशीलाबाग)। सत्संग आश्रम मिथिला भवन। जानकी महल। श्रीभगवदाचार्य स्मारक सदन एवं तुलसी स्मारक भवन आदि।

पुरातात्विक उपलब्धियाँ

मणिपर्वत, रामजन्मभूमि, कुबेरटीला, कटरा, हनुमानगढ़ी, राजघाट। ऋणमोचन पर खुदाई करके विविध सामग्रियाँ प्राप्त हुई हैं। जिससे बुद्धकाल एवं महाभारतकाल की कलाओं का परिज्ञान हुआ एवं अयोध्या नगर की प्राचीनता सिद्ध हुई।

आहार-विहार

अयोध्या में बाहुल्येन निरामिष, सात्विक एवं देवप्रसाद स्वरूप आहार उपलब्ध होता है। श्रीवैष्णवों द्वारा सञ्चालित विविध आश्रम, सेवा केन्द्र एवं विद्यालय स्थापित हैं।

शिक्षा-संस्थान

सरयू बाग संस्कृत महाविद्यालय। राजगोपाल संस्कृत महाविद्यालय। त्रिदण्डिदेव संस्कृत महाविद्यालय। गायत्री ब्रह्मचर्य्याश्रम। हनुमत् संस्कृत महाविद्यालय। बालमुकुन्द देशिक महाविद्यालय। तोताद्रि संस्कृत महाविद्यालय। अशर्फी भवन संस्कृत महाविद्यालय। संस्कृत विद्यालय रामबल्लभाकुंज। संस्कृत विद्यालय दिव्यकलाकुंज। योगिराज संस्कृत विद्यालय। श्रीरामचरण संस्कृत विद्यालय। रानोपाली संस्कृत विद्यालय। आयुर्वेद महाविद्यालय। कामताप्रसाद सुन्दरलाल साकेत महाविद्यालय (डिग्रीकालेज)। तुलसी कन्या विद्यालय। महाराजा इण्टर कालेज। तिवारीजी का संस्कृत विद्यालय। गोवर्द्धन विद्यालय आदि।

मानस-तीर्थ वर्णन

शंकर उवाच-

श्रृणु तीर्थानि गदतो, मानसानि ममानघे।
येषु सम्यंङ्नरः स्नात्वा प्रयाति परमां गतिम्।।
सत्यं तीर्थं क्षमा तीर्थं तीर्थमिन्द्रियनिग्रहाः।
सर्वभूतदया तीर्थं तीर्थमार्जवमेव च।।

सत्य तीर्थ है, क्षमा तीर्थ है, इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखना भी तीर्थ है, सब प्राणियों पर दया करना तीर्थ है और सरलता भी तीर्थ है।

दानं तीर्थं दमस्तीर्थं संतोषस्तीर्थमुच्यते।
ब्रह्मचर्यं परं तीर्थं तीर्थं च प्रियवादिता।।

दान तीर्थ है, मन का संयम तीर्थ है, संतोष भी तीर्थ कहा जाता है। ब्रह्मचर्य परम तीर्थ है और प्रिय वचन बोलना भी तीर्थ है।

ज्ञानं तीर्थं धृतिस्तीर्थ तपस्तीर्थमुदाहृतम्।
तीर्थानामपि तत्तीर्थ विशुद्धिर्मनसः परा।।

ज्ञान तीर्थ है, धृति तीर्थ है, तप को भी तीर्थ कहा गया है। तीर्थों में भी सबसे श्रेष्ठ तीर्थ है अन्तःकरण की आत्यन्तिक विशुद्धि।

न जलाप्लुतदेहस्य स्नानमित्यभिधीयते।
स स्नातो यो दमस्नातः शुचिः शुद्धमनोमलः।।

जल में शरीर को डुबो लेना ही स्नान नहीं कहलाता है। जिसने दमतीर्थ स्नान किया है- मन इन्द्रियों को वश में कर रखा है, उसीने वास्तव में स्नान किया है। जिसने मन का मल धो डाला है, वही शुद्ध है।

यो लुब्धः पिशुनः क्रूरोदाम्भिको विषयात्मकः।
सर्वतीर्थेष्वपि स्नातः पापो मलिन एव सः।।

जो लोभी हैं, चुगलखोर हैं, निर्दय हैं, दम्भी हैं और विषयासक्त हैं, वह सब तीर्थों मे स्नान करके भी पापी और मलिन ही रह जाता है।

न शरीरमलत्यागान्नरो भवति निर्मलः।
मानसे तु मले त्यक्ते भवत्यन्तः सुनिर्मलः।।

केवल शरीर के मैल को उतार देने से ही मनुष्य निर्मल नहीं हो जाता। मानसिक मल का परित्याग करने पर ही वह भीतर से अत्यन्त निर्मल

होता है।

जायन्ते च म्रियन्ते च जलेष्वेव जलौकसः।
न च गच्छन्ति ते स्वर्गमविशुद्धमनोमलाः।।

जल में निवास करने वाले जीव जल में ही जन्मते और मरते हैं, पर उनका मानसिक मल नहीं धुलता, इससे वे स्वर्ग को नहीं जाते।

विषयेष्वतिसंरागो मानसो मल उच्यते।
तेष्वेव हि विरागोऽस्य नैर्मल्यं समुदाहृतम्।।

विषयों के प्रति अत्यन्त आसक्ति को ही मानसिक मल कहा जाता है और उन विषयों में वैराग्य होना ही निर्मलता कहलाती है।

चित्तमन्तर्गतं दुष्टं तीर्थस्नानान्न शुद्धयति।
शतशोऽपि जलैर्धोतं सुराभाण्डमिवाशुचिः।।

चित्त के भीतर यदि दोष भरा है तो वह तीर्थ-स्थान से शुद्ध नहीं होता। जैसे मदिरा से भरे हुए घड़े को ऊपर से जल द्वारा सैकड़ों बार धोया जाय तो भी वह पवित्र नहीं होता। उसी प्रकार दूषित अन्तःकरण वाला मनुष्य भी तीर्थ-स्नान से शुद्ध नहीं होता।

दानमिज्या तपः शौचं तीर्थसेवा श्रुतं तथा।
सर्वाण्येतान्यतीर्थानि यदि भावो न निर्मलः।।

भीतर का भाव शुद्ध न हो तो दान, यज्ञ, तप, शौच, तीर्थ-सेवन, शास्त्र श्रवण और स्वाध्याय-ये सभी अतीर्थ हो जाते हैं।

निगृहीतेन्द्रियग्रामो यत्रैव च वसेन्नरः।
तत्र तस्य कुरुक्षेत्रं नैमिषं पुष्कराणि च।।

जिसने इन्द्रिय समूहों को वश में कर लिया है, वह मनुष्य जहाँ भी निवास करता है, वहीं उसके लिए कुरुक्षेत्र, नैमिषारण्य और पुष्कर आदि तीर्थ हैं।

ध्यानपूते ज्ञानजले रागद्वेषमलापहे।
यः स्नाति मानसे तीर्थे स याति परमां गतिम्।।

ध्यान के द्वारा पवित्र तथा ज्ञानरूपी जल से भरे हुए, राग-द्वेष-रूप मल को दूर करने वाले मानस तीर्थ में जो पुरुष स्नान करता है,

परमगति-मोक्ष को प्राप्त होता है।

भौमतीर्थ वर्णन

भौमानामपि तीर्थानां पुण्यत्वे कारणं श्रृणु।
यथा शरीरस्योद्देशाः केचिन्मध्यतमाः स्मृताः।।
तथा पृथिव्या उद्देशाः केचित्पुण्यतमाः स्मृताः।
प्रभावाददद्भतं भूमेः सलिलस्य च तेजसः।
अत्याग्रहान्मुनीनां तु तीर्थातीर्थानि सन्ति च।
तस्माद् भौमेषु तीर्थेषु मानसेषु च सम्वसेत्।।
उभयेष च यः स्नाति स याति परमां गतिम्।
तस्मात्वमपि देवेशि विशुद्धेनान्तरात्मना।।
यात्रां कुरु विधानेन यात्रा वै कथिता मया।

हे देवि! अब पृथ्वी पर तीर्थ होने के कारणों को भी मैं तुम्हें सुनाता हूँ सो सुनो, जैसे अपने शरीर में ही कोई स्थान उत्तम, मध्यम, निकृष्ट अर्थात् पवित्र-अपवित्र भेद से व्यक्त किये जाते हैं। उसी प्रकार पृथ्वी में भी कोई स्थान उत्त्म एवं पवित्र तथा कोई अपवित्र बताये जाते हैं। वे भी वहाँ के स्थल, जल, वायु वैद्युत् शक्ति (तैजस) एवं आकाशादि के वातावरण के अद्भुत प्रभाव को विचारकर योगियों द्वारा निर्णय किये गये हैं। जो अघटन घटना-घटाने में सर्व-समर्थ ऋषियों के अत्यन्त आग्रह के कारण, शापानुग्रहवश तीर्थ व अतीर्थ के रूप में परिणित हुए हैं। इस लिए मनुष्यों को चाहिए कि मानस-तीर्थों को प्रधानता देते हुए भौम-तीर्थों की सेवा एवं उनमें निवास कर दोनों के द्वारा शुचिता अर्थात् चित्त-शुद्धि की प्राप्ति करें। इसलिए हे देवेशि! तुम भी विशुद्ध-चित्त से श्रीअवध के तीर्थों की विधिपूर्वक मेरी पूर्व कही हुई सब यात्राओं को यथा-समय किया करो।

विशेष - ज्ञातव्य

श्रीअयोध्या के बहिरावरण में चौरासी-कोशी परिक्रमा के अन्तर्गत ये तीर्थ विशेष स्मरणीय हैं, श्रृंगीऋषि आश्रम, रमणक आश्रम, माण्डव्याश्रम, गौतमाश्रम, च्यवनाश्रम (नारद कुण्ड), श्रवणाश्रम, प्रमोदवन।

श्रीधाम-शरणागति

शास्त्रों एवं महापुरुषों द्वारा धाम की शरणागति अर्थात् तीर्थ-सेवन

पाँच प्रकार से बताया गया है-

1. जन्म से मरण पर्यन्त तीर्थ में जीवन बिताना अर्थात् एक तीर्थ में ही सदा रहना।
2. अन्यत्र जन्म होने पर भी आजीवन एक तीर्थ में निवास करना।
3. प्रतिवर्ष किसी एक तीर्थ का विशेष अवसरों पर दर्शन व सेवन जीवन पर्यन्त करते रहना।
4. अन्यत्र कहीं भी रहते हुए मन से ही केवल एक तीर्थ का स्मरण सदा होता रहे अथवा किसी को (अन्न वस्त्रादि द्वारा) सहायता पहुँचाकर तीर्थ में सतत् निवास करना।
5. किसी तरह से अन्त में शरीर त्याग के समय पर तीर्थ में पहुँचकर वहाँ प्राण-विसर्जन करना।

तीर्थयात्रा के उद्देश्य

मानव स्वभावतः रजोगुण के द्वारा उद्वेलित होकर अनेक रंग-बिरंगे चित्रों की ओर आकृष्ट होता है, अतः हलचल का अनुभव करने पर अन्तःकरण में इतस्ततः भ्रमण करने की प्रेरणा मिलती है। ऐसे अवसर पर धार्मिक एवं आध्यात्मिक खुराक की सम्पूर्ति के लिए यत्र-तत्र घूमते हुए अपनी इन्द्रियों की स्वाभाविक परितुष्टि हेतु जब तीर्थ-स्थली पर पहुँचता है, तब उसे देवालयों में इन्द्रियों के विषय की वस्तुयें सहज ही उपलब्ध होती हैं, जो कि मानव की अन्तश्चेतना को बहिर्मुखता से मोड़ कर अन्तर्मुख करने में सहायक होती हैं। देव-प्रसाद एवं सन्त प्रसाद का ऐसा दिव्य-महत्व है कि वह मनुष्य के अभीष्ट की पूर्ति करता हुआ अपने दिव्य-गुणों के प्रभाव से उसे बलात् भगवत् सन्निधि कराता है। उससे मनुष्य जीवन की सफलता सिद्ध होती है और विधिपूर्वक तीर्थ-सेवन करते हुए वह दूसरों को भी तीर्थ-स्वरूप बना देने में सुसमर्थ होता है, अतः तीर्थयात्रा से मानव-जीवन का लक्ष्य पूर्ण होता है।

मति कीरति गति भूति भलाई। जब जेहिं जतन जहां जेहि पाई।।
सो जानव सत संग प्रभाऊ। लोकहु वेद न आन उपाऊ।।

ज्ञातव्य

वर्तमान समय में श्रीअयोध्यापुरी सरयू के दक्षिण तट पर बसी हुई

एक अच्छी बस्ती है। जो समस्त नागरिक सुविधाओं से सम्पन्न सुन्दर धार्मिक नगर के रूप में है। इसकी अपनी नगर पालिका है। अयोध्या में डाक, तार, रेल, बस, कोतवाली, बैंक आदि सरकारी संस्थायें हैं। इस नगरी में ऐसा कोई विरला ही घर होगा जिसमें भगवान् की अर्चना-पूजा न होती हो। इस नगर में अधिकांश वैष्णवजन निवास करते हैं और उनका रहन-सहन सात्विकता से सुभूषित है। यहाँ सर्वदा उत्सव होते ही रहते हैं। कचहरी, फैक्टरियों आदि के न होने से वातावरण शान्त है। अयोध्या नगरी का श्रृगांर एवं वैभव-दर्शन चैत्र, श्रावण, कार्तिक के मेलों के रूप में अत्यन्त आकर्षक होता है। सभी तीर्थों के साथ-साथ तीर्थराज प्रयाग भी अयोध्या आकर सरयू अवगाहन करके कृतार्थ होते हैं।

उत्तम सत्संग

गंगास्नानं सतां संगो दानं च हरि पूजनम्।
अतिथ्यं च पुराणानां श्रवणं मुक्तिसाधनम्।।
वदन्ति मुनयः सर्वे साधूनां संगमं वरम्।
यतो ज्ञानं हरेर्भक्तिः पाप हानिश्च जायते।।
सप्तपुर्यस्त्रयो ग्रामा नवारण्या नवोषराः।
चतुर्दशैव गुह्यानि मुक्ति द्वाराणि भूतले।।
एतेषां दर्शनेनैव जायते यत्फलं नृणाम्।
तत्फलं समवाप्नोति ह्ययोध्या दर्शने कृते।।

इस असारभूत संसार में पूर्व महापुरुषों ने गंगा-स्नान सत्पुरुषों की संगति, श्रीहरि पूजन, नारायणरूप अतिथियों की सेवा, भगवच्चरित्रों का (पुराणों का) श्रवण, चिन्तन-मनन यह सब सारभूत सबके लिए मुक्ति का साधन बताया है परन्तु ज्ञानपूर्वक श्रीराम-चरणों में विशुद्ध-भक्ति को उत्पन करने कराने वाली एवं सम्पूर्ण पापों को तत्काल विनाश करने वाली सत्संगति को ही सर्वश्रेष्ठता दी गई है। उस सत्संग द्वारा जो फल अभीष्ट है और जिसे खोजकर पाने की भी असम्भावना होती है। वह दिव्य-ज्ञानज्योति इस अवध के रजकण में सर्वतः ओत-प्रोत है, जिसके दर्शन मात्र से ही अभ्यन्तर में निरन्तर ज्ञानज्योति स्वयं जागरूक हो पड़ती है। जिसका

अनुभव पाने वाले अनेकानेक सन्त अब भी श्रीअवध की गलियों में इतस्ततः भ्रमण करते हुए कृतार्थस्वरूप यदाकदा किन्हीं - किन्हीं बड़भागियों को मिलते हैं।

सप्तपुरियाँ (अर्थात्) (श्रीअयोध्या, मथुरा, काशी, हरिद्वार, काञ्ची, उज्जयिनी, द्वारका पुरी) तीन ग्राम (शालग्राम, शंभल ग्राम, नन्दिग्राम, अयोध्यान्तर्गत) नव-आरण्य (दण्डक, सैन्धव, जम्बू मार्ग, पुष्कर, उत्पला पर्वत, नैमिष, कुरुजांगल, हिमवान्, अर्बुद) नव-ऊषर मुक्ति के चौदह गुप्तद्वार (कोका, कुब्जा, अर्वुद, मणिकर्णी वट, शालग्राम, शूकरक्षेत्र, मथुरा, गया, निष्क्रमण, लोहार्गल, स्वयं प्रभा, मालव वदरिकाश्रम) इन समस्त पुण्य स्थलों का दर्शन करने से प्राणी को जो फल मिलता है वह श्रीअयोध्या के विधिपूर्वक दर्शन करने पर श्रद्धालुजन को सहज में ही प्राप्त होता है।

श्रीअवध में आकर के एकान्त निवास पर श्रीसरयूजी के दिव्य-तटों पर भव्य-भावनाओं से भ्रमण करते हुए जब स्वतः यह अनुभव अच्छी तरह होने लगे, कि अब हमें जगत् में कोई भी कार्य करना शेष नहीं है तथा किसी कर्म में आसक्ति या रुचि भी अब नहीं है और पूर्वकृत अपने कर्मों के फल भोगने की वासना भी निर्मूल हो गई है। प्रबल से प्रबल कष्टों को सहने में अपने को जब अचल सुमेरु के सदृश दृढ़ पाने लगें और जन्म, मृत्यु, सुख - दुःख, पाप-पुण्य, हर्षविषादादि सब अवस्थाओं में पूर्णतया एकता-दर्शने लगे तब वह स्वयं रामरूप ही हो जाता है। तभी अपने को श्रीअवध के दर्शन का पूर्ण फल-भागी भी समझना चाहिए।

एतत्ते कथितं देवि मया पृष्टं हि यत्त्वया।
इदं माहात्म्यमतुलं यः पठेत्प्रयतो नरः।।
श्रृणुयाच्छावये द्वापि स याति परमागतिम्।
तस्मादेतत्प्रयत्नेन श्रोतव्यं च नरैः सदा।।

हे देवि! आपके प्रश्नानुसार यह समस्त अयोध्या का वैभव हमने वर्णन किया। यत्नपूर्वक इसे जो प्राणी पढ़ेंगे और लोगों को भी सुनायेंगे वे अवश्य ही उत्तम-गति अर्थात् परमपद को प्राप्त करेंगे, वस्तुतः श्रद्धापूर्वक इसे सुनने वाले ही समुचित फल के भागी होंगे। अतएव सज्जन प्राणियों का

कर्तव्य यह है कि वे इसे आदर-पूर्वक अवश्य पढ़ें और दूसरों को भी सुनावें जिससे मानव-जीवन की सफलता सिद्ध हो। यह ध्यान अवश्य रहे कि ईश्वर विमुखों, नास्तिकों व दाम्भिकों को इस रहस्य का उपदेश न किया जाय। श्रीअवध के प्रेमी सभी सज्जनवृन्द, स्वस्वअधिकारानुसार इसे पढ़कर पूर्ण-पात्रता प्राप्त करते हुए मानवोचित लाभ उठा सकेंगे।

श्रीराघवं दशरथात्मजमप्रमेयं सीतापतिं रघुकुलान्वय रत्नदीपं।
आजानुवाहुमरविन्ददलायाताक्षं रामं निशाचरविनाशकरं नमामि।।
रामाय रामचन्द्राय रामभ्रदाय वेधसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतीयाः पतये नमः।।

श्रावण झूला-झाँकी

यह उत्सव अयोध्या में साधारणतः अधिकांश मन्दिरों में मनाया जाता है। विशेष उल्लेखनीय निम्नांकित स्थान हैं, जैसे- श्रावण शुक्ल 3 मणिपर्वत सामूहिक झूला, सद्गुरु सदन गोला घाट, लक्ष्मण किला, हनुमत् निवास, हनुमत् सदन, राजगोपाल (पुराना भूंड मन्दिर), मोहन सेठ की कोठी नयाघाट राजसदन खाकी अखाड़ा, जानकी घाट श्रीवेदान्तीजी का स्थान बड़ी-कुटिया, मणिरामदासकी छावनी, माधुरी कुंज, नजरवगिया, मंगल भवन रामकोट, बड़ा-स्थान, श्रीकनक भवन, अमावा राज-मन्दिर रंगमहल, फकीरेरामजी का स्थान अशर्फी भवन, श्रीकौशलेश सदन आदि।

स्मरण रहे कि यह उत्सव आषाढ़ी पूर्णिमा से प्रारम्भ होकर भाद्रकृष्ण पञ्चमी पर्यन्त अवाधरूप से कतिपय स्थलों पर सुसम्पन्न होता है। गोलाघाट, गमला बाबा, फकीरेरामजी, रंगमहल इन स्थानों में पूर्ण श्रावण-भर सायंकाल झूला पड़ता है। श्रीसद्गुरु सदन गोलाघाट में भाद्रकृष्ण तृतीयाको सारी-रात विभिन्न स्वरूपों की सामूहिक झूलन-झाँकी होती है तथा आये हुए समस्त संगीतज्ञों, कलाकारों को यथोचित पुरुस्कार दिया जाता है। पुनः भाद्रकृष्ण पंचमीको श्रीजानकी बाग (चक्रतीर्थ) में अन्तिम झूलनोत्सव मनाया जाता है, जो अत्यन्त सराहनीय होता है।

नोट :- अयोध्या यातायात के लिए राजकीय बसें, रेलें, लखनऊ, इलाहाबाद, वाराणसी, गोरखपुर गोंड़ा से सीधे पहुँचाती हैं। देहरादून-हावड़ा एक्सप्रेस अयोध्या होकर ही जाती है। गंगा-जमुना, मथुरा, दिल्ली से अयोध्या होकर

दानापुर जाती है।

श्रीसूर्य-वंशावली

आदिपुरुष श्रीनारायण के नाभि-कमल से ब्रह्मा उनसे मरीचि उनके कश्यप हुए। इनकी पत्नी संज्ञा से श्राद्धदेव मनु हुए। इन्होंने अपनी पत्नी श्रद्धा से दस पुत्र उत्पन्न किये। जिनमें सबसे बड़े इक्ष्वाकु थे जिन्होंने अयोध्या में राजधानी स्थापित की, इन्हीं की प्रार्थना से श्रीवशिष्ठजी मानसरोवरसे सरयूजी को लाये। फिर क्रमशः विकुक्षि, पुरञ्जय हुए। इनकी ख्याति इन्द्रवाह एवं ककुत्स्थ नाम से हुई। उनमें अनेना, पृथु, विश्वरन्धि, चन्द्र, शाबस्त, वृहदश्व, दृढाश्व, हर्यश्व, निकुम्भ, वर्हणाश्व, सेनजित युवनाश्व, मान्धाता, पुरुकुत्स, त्रसद्दस्यु, अनरण्य, हर्यश्व, अरुण, त्रिबन्ध, सत्यव्रत (ये त्रिशंकु नाम से प्रसिद्ध हुए) हरिश्चन्द्र, रोहित, हरित, चम्प, सुदेव, विजय, भरुक, वृक, बाहुक, सगर, असमन्जस, अंशुमान, दिलीप, भगीरथ-आप, श्रीगंगाजी को लाये। श्रुतनाभ, सिन्धुद्वीप, अयुतायु, ऋतुपर्ण, सर्वकार्म, सुदास, सौदास (ये कल्मषपाद नाम से प्रसिद्ध हुए)। अश्मक, मूलक, दशरथ, ऐडविड, विश्वसह, खट्वांग, दीर्घवाहु रघु, अज, महाराज श्रीदशरथ, इनके भगवान् श्रीराम, लक्ष्मण, भरत एवं शत्रुघ्न।

श्रीराम के कुश और लव। लक्ष्मण के अंगद एवं चित्रकेतु। भरत के तक्ष तथा पुष्कल। शत्रुघ्न के सुबाहु और श्रुतसेन हुए। पुनः क्रमशः कुश, अतिथि, निषध, नभ, पुण्डरीक, क्षेम, धन्वा, देवानीक, अनीक, पारियात्र, बलस्थल, वज्रनाभ, खगण, विधृति, हिरण्यनाभ, पुष्य, ध्रुवसन्धि, सुदर्शन, अग्निवर्ण, शीघ्र, मरू। इन्होंने योग साधन से सिद्धि प्राप्त करली थी और अब भी कलाप ग्राम में निवास कर तपस्या कर रहे हैं। कलियुग के अन्त में सतयुग का अवतरण करते हुए सूर्यवंश का विस्तार करेंगे। मरू प्रसुश्रुत, सन्धि, अमर्षण, महस्वान, विश्व, साह्व, प्रसेनजित, तक्षक, वृहदबल इन्होंने महाभारत युद्ध मे भाग लिया।

वृहद्रल, उरुक्रिय, वत्सवृद्ध, प्रतिव्योम, भानु, दिवाकर, सहदेव, वृहदश्व, भानुमान्, प्रतीकाश्व, सुप्रतीक, मरूदेव, सुनक्षत्र, पुष्कर, अन्तरिक्ष, सुतपा, अमित्रजित, वृहद्राज, वर्हि, कृतञ्जय, रणञ्जय, सञ्जय, शाक्य, शुद्धोद, लांगल, प्रसेनजित, क्षुद्रक, रणक, सुरथ, सुमित्र। प्राप्त प्रमाणों से

यहाँ तक अयोध्या राजधानी सूर्यवंशियों की थी। सतयुग से लेकर कलियुग के अतीतकाल तक सूर्यवंश की अवस्थिति इस प्रकार प्रमाणित है।

(श्रीमद् भागवत नवम स्कन्ध)

निमि वंशावली

श्रीइक्ष्वाकु, निमि, जनक (विदेह मिथिल), उदावसु, नन्दिवर्द्धन, सुकेतु, देवरात, वृहद्रथ, महावीर्य, सुधृति, धृष्टकेतु, हर्यश्व, मरु, प्रतीपक, कृतिरथ, देवमीढ, विश्रुत, महाधृति, कृतिरात, महारोमा, स्वर्णरोमा, ह्रस्वरोमा सीरध्वज (इन्हीं के यज्ञ में भूशुद्धि करते समय सीराग्र से श्रीसीताजी की उत्पत्ति हुई) कुशध्वज, धर्मध्वज, कृतध्वज, केशिध्वज, भानुमान, शतद्युम्न, शुचि, सनद्धाज, ऊर्ध्वकेतु, अज, पुरुजित, अरिष्टनेम, श्रुतायु, सुपार्श्वक, चित्ररथ, क्षेमाधि, समरथ, सत्यरथ उपगुरु, उपगुप्त, वस्वनन्त, युयुध, सुभाषण, श्रुत, जय, विजय, ऋतु, सुनक, वीतहव्य, धृति, बहुलाश्व (ये बड़े भारी भगवद्भक्त थे, इनसे मिलने के लिए भगवान् श्रीकृष्ण स्वयं मिथिला पधारे और श्रुतदेव ब्राह्मण एवं बहुलाश्व के घर दो रूप धारण कर एक ही समय दोनों का आतिथ्य स्वीकार किये) कृति, महावशी ये सभी मैथिल, जनक, विदेह नाम से ख्यात हुए और ये सभी आत्मविद्या विशारद थे।

(श्रीमद्भागवत नवम स्कन्ध द्वादश अध्याय)

सुनु कपीस अंगद लंकेसा। पावन पुरी रुचिर यह देसा।।
यद्यपि सब बैकुण्ठ बखाना। वेद पुराण विदित जग जाना।।
अवध सरिस प्रिय मोहिं न सोऊ। यह प्रसंग जानै कोउ कोऊ।।
हरषे कपि सब सुनि प्रभु बानी। धन्य अवध जो राम बखानी।।

(रामचरित मानस)

लेखक का परिचय

श्रीगणेशदासजी 'भक्तमाल' सुदामाकुटी, वृन्दावन

श्रीकाशी से गोवर्धन फिर वहाँ से सन् 1950 ई0 में श्रीअयोध्या आकर जिस समय यह दास श्रीहनूमानगढ़ी में विराजमान श्रीहनूमानजी की सेवा में था, उसी समय काशी निवासी श्रीविश्वनाथ सिंह दीनानाथ गोला से मेरा परिचय एवं पता प्राप्तकर श्रीअयोध्या आकर श्रीब्रह्मचारीजी ने मुझे दर्शन दिया। विचारों में साम्य होने के कारण मेरा सम्पर्क घनिष्ट होता गया और इनके सत्संग से श्रीअयोध्याके तीर्थों की महिमा एवं उनके दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त हुआ। साथ ही श्रीरुद्रयामलान्तर्गत एवं स्कन्द पुराणान्तर्गत श्री अयोध्या-माहात्म्य का विधिवत् अध्ययन हुआ। पश्चात् सन्तोंकी प्रेरणा से **'श्रीअयोध्या-दर्पण'** का लेखन एवं प्रकाशन हुआ।

उल्लेखनीय है कि ब्रह्मचारीजी की धामनिष्ठा ने बहुतों को धामनिष्ठ बनाया। परोपकारिता स्वभाव में इनके समाई थी, अतः धार्मिक, सामाजिक संस्थाओं के माध्यम से एवं स्वतन्त्र भी आप सदा लोक-सेवा में ही रत रहे। तुलसी-स्मारक आदि निर्माण कार्यों में भी आपने तन-मन से योगदान किया। जिससे तत्कालीन शासन के अधिकारीजन एवं सज्जन, विद्वान पूरी तरह अवगत हैं। आपकी लोक-सेवा-भावनाको कुछ लोगों ने प्रतिष्ठाका विषय बनाकर आपका विरोध भी किया। परन्तु कालान्तर में निष्काम सेवाओं से प्रभावित होकर विरोधियोंने भी स्वीकार किया कि जैसा आपका नाम है वैसे ही आप भगीरथ प्रयत्नकर्त्ता भी हैं। ऐसे सन्तके वास्तविक स्वरूपका चित्र प्रस्तुत कर परिचय देना तो मुझ सरीखे तुच्छके लिए सर्वथा असम्भव ही है, फिर भी जन-जिज्ञासाकी आंशिक पूर्ति हेतु मैं जितना जान सका हूँ उतना लिखनेका प्रयास करता हूँ।

ग्रन्थों के पठन-पाठन के साथ उसके लेखक के परिचय की जिज्ञासा सभी के मन में हो जाना प्रायः स्वाभाविक बात है। परिचयका स्पष्ट उल्लेख न होने पर जन्म-गोत्रादिके विषय में कालान्तर में अनेकों तर्क उठते

हैं, अतः पाठकों के समक्ष **'अयोध्या-दर्पण'** के लेखक का संक्षिप्त परिचय कतिपय पंक्तियों में लिख रहा हूँ।

श्रीधाम-महिमासे पूर्ण इस ग्रन्थ के लेखक का जन्म, गौतम गोत्रीय माध्यन्दिनीय शाखाध्यायी सरयूपारीण ब्राह्मण मिश्रवंश में समुत्पन्न पण्डित श्रीठाकुर मिश्र तदात्मज पण्डित श्रीमहादेव मिश्र पिता एवं श्रीमती सिरताजी देवी, जननी के द्वारा-थुम्हवा ग्राम जनपद बस्ती में विक्रम सम्वत् 1972 वैशाख पूर्णिमा शुक्रवार को हुआ। वैदिक संस्कारों से सुसंस्कृत होकर ये भगीरथराम इस नाम से विख्यात हुए। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा जन्म-भूमि के निकटतम संस्कृत विद्यालय में हुई। जन्म से ही रामचरित मानस में अभिरुचि होने के नाते दस साल की ही आयु में पैदल यात्राकर श्रीअयोध्या - धामकी शरण प्राप्त की। रामनाम एवं रामधाम के प्रसाद से अल्पकाल में ही अनेक विषयों पर गम्भीर अध्ययन किया और मन्त्रशास्त्रों में प्रवेश पाकर क्रमशः भगवदुपासना में अग्रसर हुए थे। दैवादेश प्राप्त कर सं0 1984 वि0 में वाराणसी स्वाध्याय हेतु पहुँचे।

वहाँ सिद्धसन्त श्रीमान् श्रीकेला ब्रह्मचारीजी एवं श्रीवासुदेव शरण जी ब्रह्मचारीजी की संरक्षकता में स्वाध्याय एवं उपासना की परिपुष्टि हुई। प्रातः स्मरणीय श्रीरामेश्वर भट्टाचार्य्य सार्वभौम जी जो कि प्रख्यात मन्त्रवेत्ता थे। उनकी सन्निधि एवं हृदय स्पर्शिनी परिचर्य्या करते हुए करते हुए विधिवत् श्रीराममन्त्राराधन का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जिससे दैवी सम्पदाका अर्जन हुआ। तदुपरान्त राष्ट्र समुन्नति एवं देशसेवाकी भावना अभिव्यक्त हुई। जिसके लिए अनेक अनुष्ठान इनके द्वारा सम्पन्न हुए।

इसी उद्देश्य से काशीजी के अतिरिक्त विष्णुपद (गया), प्रयाग, चित्रकूट, गंगोत्री, उत्तरकाशी पशुपतिनाथ (काठमाण्डू), विध्याचल, नैमिषारण्य, वृन्दावन, गोवर्द्धन एवं नर्मदा तीर्थ आदि का आपने सम्यक्तया परिसेवन किया और तत्तत् स्थानीय देवोंके एवं सिद्धसन्तों के प्रसाद उपलब्ध किये। परिणाम स्वरूप तीर्थोद्धार तथा सिद्धसन्तों के पुण्य स्मारकों का निर्माण कराने का शुभादेश प्राप्त हुआ। तदनुसार आप सन् 1956 ई0 में पुनः गोवर्द्धन से श्रीअयोध्या पहुँचे और वहाँ आपने सामुदायिक सहकारिता

का आह्वान करके सुसंगठित शक्ति से सम्पन्न होकर **'अवध सेवा समिति'** साकेत विकास समिति एवं तुलसी सेवा समिति आदि संस्थाओं के संचालन आदि का कार्य विधिवत् संपन्न किया। परमहंस श्रीराममंगलदास जी, गोकुल भवनकी उदार छत्रछाया इन्हें प्राप्त हुई।

प्रसंगत यह भी यहाँ उल्लेखनीय है कि श्रीब्रह्मचारीजी की दिनचर्य्या में गोस्वामी श्रीनाभाजी के सिद्धान्तानुसार भक्त, भक्ति, भगवन्त और श्रीगुरुदेवकी सदा सेवा व आराधना रही है। बाल्यकाल से स्वाभाविक आराध्य चतुष्टय में निष्ठाके फलस्वरूप इन्हें अनेक सिद्धसन्तों के दर्शन प्राप्त हुए। एकबार आप अपने पूज्य पिता जी के साथ निज ग्राम से 96 मील श्रीअवध पैदल आये। उस सयम आपकी आयु केवल दस वर्षकी ही थी। धामनिष्ठा से विधिवत् की गई इस यात्रा से श्रीअयोध्या देवी ने एवं श्री हनूमान जी ने अपना प्रभाव प्रत्यक्ष दिखाकर इनके चित्तको ऐसे आकृष्ट किया कि फिर वह कभी घर गृहस्थाश्रमकी ओर न जा सका। श्रीहनूमानजी की कृपादृष्टि ने इन्हें एवं इनके विचारों को ऐसा कवच प्रदान किया कि जिससे वे माय कि झञ्झावातों से कभी विचलित नहीं हुए। अपने कर्तव्य पथ पर सदा अग्रसर रहे। जब-जब आप विशेष अनुष्ठानों में ध्यान मग्न हुए, तब-तब देवताओं से प्रत्यक्ष आदेश उपदेश इन्हें प्राप्त हुए। जीवनयात्रा में 'यथालाभ सन्तोष सदाई।' ने इन्हें निश्चिन्त कर दिया।

श्रीब्रह्मचारी जी की पूजनीया माता जी का दर्शन मुझे श्रीअयोध्या (राजघाट) में हुआ। वे महाभागवती थीं। श्रीविजय राघव मन्दिर के स्वामी श्रीकमलनयनाचार्य की कृपापात्र थीं। उनके भक्तिमय लोकगीतों की ध्वनि आज भी कभी-कभी मेरे कानों में गूंजती है। उन्हींके पुण्यप्रतापने श्री भगीरथ जी को गंगा जी के लाने वाले भागीरथ बना दिया।

लौकिक सामाजिक सेवाओं के साथ ही शोधपूर्ण साहित्य सृजन तथा प्रकाशन यह कार्य हुआ, जिसका द्योतक यह **'श्रीअयोध्या-दर्पण'** है। इसके अतिरिक्त सार्वजनिक हित-चिन्तन, तीर्थदीपिका, विचार बिन्दु आदि आपकी मुख्य कृतियां प्रकाशित हुई हैं। हिन्दी एवं संस्कृत की समुन्नति के लिए आपके सुझाव प्रशासनको मान्य हुए। लोकसभा-सांसदों ने भी आपके

विचारों को मान्यता प्रदान की। श्रीअयोध्या एवं अयोध्यान्तर्गत विविध दर्शनीय स्थलों की महिमाका स्फुट प्रकाशन-पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से देशव्यापी हुआ। श्रीरामांक एवं हनुमान अंक (कल्याण) में आपके लेखोंने महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया।

राजकीय प्रशासनिक सहकारिता से इनके उद्देश्यों की पूर्ति बड़ी सरलता से सम्पन्न हुई। प्रायः उच्चस्तरीय अधिकारीजन इनके क्रियाकलापों से पूर्ण परिचित हैं। अयोध्याकी नवःनिर्माण सम्बन्धी इनकी समस्त योजनायें स्वीकृत हुई। यह दैवी प्रेरणा का पूर्ण परिचायक है। आशा है कुछ ही काल में श्रीअयोध्या नगरी पूर्णतः सुसज्जित होकर अपने स्वरूप का दर्शन करायेगी।

श्रीअयोध्यादेवी से हमारी हार्दिक प्रार्थना है कि अपने भक्त श्रीब्रह्मचारी भगीरथराम को दीर्घायु प्रदानकर अपनी सेवा में सर्वदा प्रोत्साहन देती रहें, जिससे हम सभी लोग श्रीअयोध्या सम्बन्धी साहित्य का अध्ययन कर एवं श्री अयोध्या के सभी तीर्थों का सेवन कर आत्म-कल्याण कर सकें।

दासानुदास- **गणेशदास**

अयोध्या दर्शन
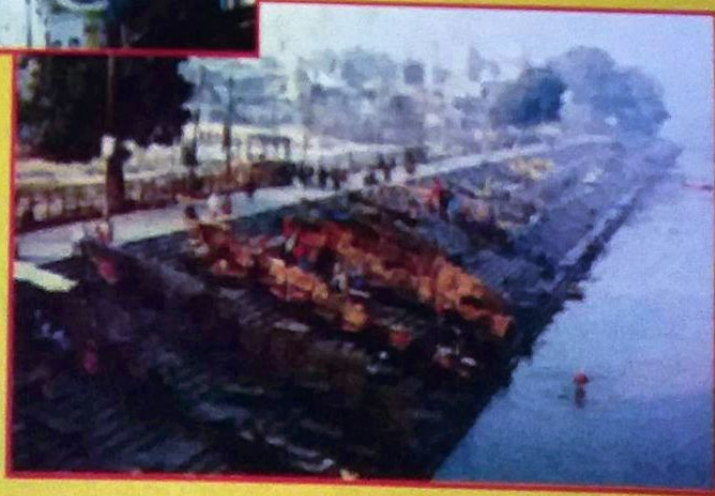
मुद्रक : हेमांगी आफसेट, उन्नाव (उ0प्र0) 209801
सम्पर्क सूत्र : 9838500349